बाल गोबिन भगत (रामवृक्ष बेनीपुरी)

लेखक परिचय -

जन्म- 1899, बेनीपुर गाँव, जिला-मुजफ्फरपुर (बिहार)

देहावसान - 1968 **उपनाम** - 'कलम का जादूगर'

पत्र - पत्रिकाएँ - तरुण भारत, किसान मित्र, बालक, युवक, योगी, जनता, जनवाणी, नयी धारा ।

इनका सम्पूर्ण साहित्य बेनीपुरी रचनावली के 8 खंडों में प्रकाशित।

रचनाएँ:- पतितों के देश में (उपन्यास)

चिता के फूल (कहानी), अंबपाली (नाटक) माटी की मूरतें (रेखाचित्र),

पैरों में पंख बांधकर (यात्रा - वृतांत)

जंजीरें और दीवारें (संस्मरण)

वस्तुनिष्ठ प्रश्न : -

1. 'बालगोबिन भगत' पाठ गद्य साहित्य की कौनसी विधा है।

(क) संस्मरण (ख) कहानी
(ग) नाटक (घ) रेखाचित्र (घ)

2. बालगोबिन भगत के बेटे को मुखाग्नि किसने दी?

(क) पतोहू ने (ख) बालगोबिन भगत ने
(ग) गाँव वालों ने (घ) लेखक ने (क)

3. बालगोबिन भगत अपने खेत की पैदावार कहाँ ले जाते थे?

(क)मंडी (ख)बाजार
(ग)कबीरपंथी मठ (घ) सरकारी गोदाम (ग)

4. 'पुरवाई' शब्द किसके लिए प्रयुक्त हुआ है।

(क) हवा (ख) पानी
(ग) आग (घ) जल (क)

5. बालगोबिन भगत कौनसा वाद्य यंत्र बजाते थे?

(क) बाँसुरी (ख) हारमोनियम
(ग) खँजड़ी (घ) ढपली (ग)

लघुत्तरात्मक प्रश्न-

1. बालगोबिन भगत किस प्रकार के व्यक्तियों को अधिक स्नेह का पात्र मानते थे और क्यों?

उत्तर- बालगोबिन भगत कमजोर, असहाय, बीमार, गरीब आदि प्रकार के व्यक्तियों को अधिक स्नेह का पात्र मानते थे। उनकी समझ में ऐसे आदमियों को ज्यादा प्यार व देखभाल की आवश्यकता होती है।

2. लेखक द्वारा बालगोबिन भगत की संगीत-साधना का चरम उत्कर्ष किस दिन देखा गया?

उत्तर- लेखक को उनकी संगीत-साधना का चरम उत्कर्ष उस दिन देखने को मिला, जिस दिन उनके पुत्र की मृत्यु हो गयी थी। वे उस दिन सामान्य गृहस्थों की तरह विलाप न करके शव के सामने बैठकर तल्लीन होकर भक्ति के पद गा रहे थे।

3. बालगोबिन भगत अपनी पतोहू को रोने के बदले उत्सव मनाने को क्यों कह रहे थे?

उत्तर- भगत का मानना था कि व्यक्ति की मृत्यु होने पर उसकी आत्मा अपने प्रियतम परमात्मा के पास चली जाती है। विरहिणी आत्मा का परमात्मा प्रियतम से मिलन आनन्दोत्सव की घटना होती है। इसलिए वे अपनी पतोहू को रोने के बदले उत्सव मनाने को कह रहे थे।

दीर्घउत्तरीय प्रश्न:-

1. बालगोबिन भगत को साधु क्यों कहा गया है। विस्तार से वर्णन कीजिए।

उत्तर- खेती-बाड़ी से जुड़े गृहस्थ बालगोबिन भगत साधु जैसा जीवन व्यतीत करते थे। क्योंकि सरलता, सत्यनिष्ठा, कर्मशीलता, परोपकार, ईमानदारी, नि:स्वार्थता, सामाजिक आकर्षणों में निर्लिप्ता, काम, क्रोध, मोह और लोभ का परित्याग यह ही सच्चे साधु की पहचान है। यह सभी गुण बालगोबिन भगत में थे। सांसारिकता के त्याग और पूजा, अनुष्ठानों के आडम्बर से ही कोई साधु नहीं बनता। इसी कारण भगतजी गृहस्थ होते हुए भी एक सच्चे साधु थे।

शेखावाटी मिशन - 100

पठित गद्यांश पर आधारित प्रश्नोत्तरः-

आसाढ़ की रिमझिम है। समूचा गाँव खेतों में उत्तर पड़ा है। कहीं हल चल रहे हैं; कहीं रोपनी हो रही हैं। धान के पानी भरे खेतों में बच्चे उछल रहे हैं। औरतें कलेवा लेकर मेंड़ पर बैठी है। आसमान बादल से घिराः धूप का नाम नहीं। ठंडी पुरवाई चल रही। ऐसे ही समय आपके कानों में एक स्वर-तरंग झंकार-सी कर उठी। यह क्या है- यह कौन है। यह पूछना न पड़ेगा। बालगोबिन भगत समूचा शरीर कीचड़ में लिथड़े, अपने खेत में रोपनी कर रहे हैं। उनकी अँगुली एक-एक धान के पौधे को, पंक्तिबद्ध, खेत में बिठा रही है। उनका कंठ एक-एक शब्द को संगीत के जीने पर चढाकर कुछ की ऊपर, स्वर्ग की ओर भेज रहा है और कुछ को इस पृथ्वी की मिट्टी पर खड़े लोगो के कानों की ओर !

1. **गद्यांश के अनुसार किस फसल की रोपनी हो रही है?**

उत्तर- गद्यांश के अनुसार धान की रोपनी हो रही है।

2. **समूचा गाँव कब खेतों में उत्तर जाता है?**

उत्तर- आसाढ़ की रिमझिम बरसात में समूचा गाँव खेतों में उत्तर जाता है।

3. **आसाढ़ की रिमझिम में बच्चे क्या प्रतिक्रिया करते हैं?**

उत्तर- बच्चे धान के पानी भरे खेतों में उछलकूद अर्थात् किलोल कर रहे हैं।

4. **भगत खेत में रोपनी के साथ क्या कर रहे हैं?**

उत्तर- बालगोबिन भगत खेत में रोपनी के साथ-साथ भजन गा रहे हैं।

पठित गद्यांश पर आधारित प्रश्नोत्तरः-

उनका बेटा बीमार है, इसकी खबर रखने की लोगों को कहाँ फुरसत। किंतु मौत तो अपनी ओर सबका ध्यान खींचकर ही रहती है। हमने सुना, बालगोबिन भगत का बेटा मर गया। कुतूहलवश उनके घर गया। देखकर दंग रह गया। बेटे को आँगन में एक चटाई पर लिटाकर एक सफेद कपड़े ढाँक रखा है। वह कुछ फूल तो हमेशा ही रोपते रहते, उन फूलों में से कुछ तोड़कर उस पर बिखरा दिए हैं। फूल और तुलसीदल भी। सिरहाने एक चिराग जला रखा है। और, उसके सामने जमीन पर ही आसन जमाए गीत गाए चले जा रहे हैं। वही पुराना स्वर, वही पुरानी तल्लीनता ।

1. **लेखक बालगोबिन भगत के घर क्यों गया?**

उत्तर- बालगोबिन भगत का बेटा मर गया इसलिए कुतूहलवश लेखक उनके घर गया।

2. **कौनसी बात अपनी ओर सबका ध्यान खींचकर ही रहती है?**

उत्तर- मौत की खबर अपनी ओर सबका ध्यान खींचकर ही रहती है।

3. **लेखक क्या देखकर आश्चर्यचकित हुए?**

उत्तर- पुत्र की मृत्यु पश्चात भगत द्वारा किये गये क्रियाक्रम को देखकर लेखक आश्चर्यचकित हुए।

4. **भगतजी बेटे के शव के पास बैठकर क्या कर रहे थे?**

उत्तर- भगतजी बेटे के शव के पास आसन लगाकर गीत गाए चले जा रहे थे।

शेखावाटी मिशन - 100

लखनवी अंदाज (यशपाल)

लेखक परिचय -

जन्म - सन् 1903 - फीरोजपुर छावनी (पंजाब)

प्रारंभिक शिक्षा - काँगड़ा से

बी.ए. - नेशनल कॉलेज, लाहौर

भगतसिंह व सुखदेव से लाहौर में परिचय

क्रांतिकारी गतिविधियों के कारण जेल जाना पड़ा।

मृत्यु- 1976

रचनाएँ:-

कहानी संग्रह- ज्ञानदान, तर्क का तूफान, पिंजरे की उड़ान, वा दुलिया, फूलों का कुर्ता।

प्रमुख उपन्यास - झूठा सच (भारत विभाजन पर) अमिता, दिव्या, पार्टी कामरेड, दादा कामरेड, मेरी तेरी उसकी बात

'लखनवी अंदाज' पाठ की विधा- व्यंग्य

इस व्यंग्य लेख में पतनशील सांमती वर्ग की बनावटी जीवन शैली पर कटाक्ष

वस्तुनिष्ठ प्रश्न :-

1. **लेखक ने किस क्लास की टिकट खरीदकर रेल यात्रा की?**

(क) सेकण्ड क्लास (ख) फर्स्ट क्लास
(ग) थर्ड क्लास (घ) फोर्थ क्लास (क)

2. **कहानी के लिए आवश्यक है?**

(क) विचार (ख) घटना
(ग) पात्र (घ) उपर्युक्त सभी (घ)

3. **सफेदपोश सज्जन ने तौलिए पर क्या रखा था?**

(क) खरबूजा (ख) पपीता
(ग) केला (घ) खीरा (घ)

4. **''खीरा लजीज होता है लेकिन मेदे पर बोझ डाल देता है।'' नवाब की बात सुनकर लेखक को क्या लिखने का विचार आया?**

(क) नयी कविता (ख)साठोंतरी कविता
(ग) नयी कहानी (घ) इनमें से कोई नहीं (ग)

लघूत्तरात्मक प्रश्न-

1. **'यशपाल ने पतनशील सामन्ती वर्ग पर कटाक्ष किया है।' इस कथन का आशय स्पष्ट कीजिए।**

उत्तर- 'लखनवी अंदाज' व्यंग्य में यशपाल ने लखनऊ के एक नवाब साहब की बनावटी जीवन शैली का चित्रण किया है। नवाब साहब ने खीरों को छीलकर और नमक-मिर्च लगाकर केवल सूंघा और कहा कि इसका स्वाद लाजवाब है। खीरे खाये नहीं फेंक दिये। इस तरह दिखावटी रईस बनने का आचरण होने से लेखक ने सामन्ती वर्ग पर कटाक्ष किया है।

2. **लेखक ने क्या सोचकर सेकण्ड क्लास का टिकट लिया था?**

उत्तर- लेखक ने भीड़ से बचने के लिए, एकान्त में नयी कहानी के बारे में सोच सकने के लिए और खिड़की से प्राकृतिक दृश्य देख सकने के विचार से ही सेकण्ड क्लास का टिकट लिया था।

3. **'लखनवी अंदाज' कहानी से हमें क्या सन्देश मिलता है।**

उत्तर- 'लखनवी अंदाज' कहानी से हमें संदेश मिलता है कि हमें दिखावटी जीवन-शैली से हमेशा दूर रहकर वास्तविकता का सामना करना चाहिए। क्योंकि जीवन में स्थूल और सूक्ष्म दोनों का ही महत्व है। जो लोग सनक भरी आदतों से पेट भरने का दिखावा करते हैं। वे अवास्तविक हैं। चाहे नयी कहानी के लेखन की ही बात क्यों न हो।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्नः -

1. **'नयी कहानी' और 'लखनवी अंदाज' में आपको क्या समानता दिखाई देती है।**

उत्तर- 'नयी कहानी' और 'लखनवी अंदाज ' दोनों सूक्ष्म काल्पनिक और अशरीरी हैं। दोनों ही वास्तविकता को महत्व न देकर बनावटी जीवन शैली को महत्व देते हैं। नवाब साहब झूठी नवाबी के कारण बिना खीरा खाये अपना पेट भरना चाहते हैं तो नये कहानीकार बिना घटना, पात्र और विचार के कहानी लिखना

शेखावाटी मिशन - 100

चाहते हैं। दोनों ही यथार्थ की उपेक्षा कर परजीवी संस्कृति की आराधना करते हैं।

पठित गद्यांश पर आधारित प्रश्नोत्तर

ठाली बैठे, कल्पना करते रहने की पुरानी आदत है। नवाब साहब की असुविधा और संकोच के कारण का अनुमान करने लगे। सम्भव है, नवाब साहब ने बिल्कुल अकेले यात्रा कर सकने के अनुमान में किफायत के विचार से सेकण्ड क्लास का टिकट खरीद लिया हो और अब गवारा न हो कि शहर का कोई सफेदपोश उन्हें मँझले दर्जे में सफर करता देखे।.... अकेले सफर का वक्त काटने के लिए ही खीरे खरीदे होंगे और अब किसी सफेदपोश के सामने खीरा कैसे खाएँ ?

1. लेखक ने पुरानी आदत के अनुसार क्या किया?

उत्तर- लेखक नवाब साहब की असुविधा और संकोच के कारण का अनुमान करने लगे।

2. लेखक की पुरानी आदत क्या है?

उत्तर- ठाली बैठे, कल्पना करते रहने की लेखक की पुरानी आदत है।

3. सफेद पोश ने खीरे क्यों खरीदे होंगे ?

उत्तर- अकेले सफर का वक्त काटने हेतु खीरे खरीदे होंगे।

4. 'शहर का कोई सफेदपोश उन्हें मँझले दर्जे में सफर करता देखें। पंक्ति में 'कोई' शब्द किसके लिए प्रयुक्त हुआ?

उत्तर- वाक्य में 'कोई' शब्द लेखक के लिए प्रयुक्त हुआ है।

पठित गद्यांश पर आधारित प्रश्नोत्तर

नवाब साहब ने सतृष्ण आँखों से नमक मिर्च के संयोग से चमकती खीरे की फाँकों की और देखा। खिड़की के बाहर देखकर दीर्घ नि: श्वास लिया। खीरे की एक फाँक उठाकर होंठो तक ले गए। फाँक को सूंघा। स्वाद के आनन्द में पलके मुँद गई। मुँह में भर आए पानी का घूँट गले से उत्तर गया। तब नवाब साहब में फाँक को खिड़की से बाहर छोड़ दिया। नवाब साहब खीरे की फाँकों को नाक के पास ले जाकर, वासना से रसास्वादन कर खिड़की के बाहर फेंकते गए। नवाब साहब ने खीरे की सब फाँकों को खिड़की के बाहर फेंककर तौलिए से हाथ और होंठ पौछ लिए और गर्व से गुलाबी आँखों से हमारी ओर देख । लिया, मानो कह रहे हों - यह है खानदानी रईसों का तरीका !

1. नवाब साहब ने सतृष्ण आँखों से क्या देखा ?

उत्तर- उन्होंने सतृष्ण आँखों से मसाले के संयोग से चमकती खीरे की फाँकों को देखा।

2. नवाब साहब ने फाँक को खिड़की से बाहर क्यों छोड़ दिया?

उत्तर- नवाब साहब ने वासना से रसास्वादन कर फाँक को खिड़की से बाहर छोड़ दिया।

3. नवाब साहब की पलकें क्यों मुड़ गई?

उत्तर- फाँक को होठों तक ले जाने व सूँघने से स्वाद के आनन्द में पलकें मुड़ गई ।

4. नवाब साहब ने खीरे की फाँकों की खिड़की से फेंकना और तौलिए से हाथ मुंह पोंछना किस भाव को दर्शाता है?

उत्तर- नवाब साहब ने दर्शाया कि जो उच्चकुलीन और खानदानी रईस होते हैं उनके ऐसे ही अंदाज होते हैं।

शेखावाटी मिशन - 100

एक कहानी यह भी (मन्नू भण्डारी)

लेखक परिचय -

जन्म- 1931- भानपुरा (मंदसौर) मध्यप्रदेश ।

इंटर तक शिक्षा - अजमेर (राजस्थान) में

स्वातंत्र्योत्तर कहानी की प्रमुख कहानीकर ।

कहानी संग्रह - एक प्लेट सैलाब, मैं हार गई, यही सच है, त्रिशंकु ।

उपन्यास - आपका बंटी, महाभोज: ।

आत्मकथ्य- एक कहानी यह भी ।

वस्तुनिष्ठ प्रश्न-

1. **लेखिका के पिता ने रसोई को क्या कहकर सम्बोधित किया है।**

(क) रसोईघर (ख) भटियारखाना

(ग) भट्टी (घ) तपनघर (ख)

2. **लेखिका ने बचपन में अपने भाइयों के साथ कौन-कौनसे खेल खेले थे?**

(क) क्रिकेट (ख) कब्बड्डी

(ग) गुल्ली-डण्डा (घ) बॉलीबाल (ग)

3. **लेखिका को साहित्य की दुनिया में प्रवेश किसने करवाया?**

(क) माता-पिता ने (ख) मित्रों ने

(ग) प्राध्यापिका शीला अग्रवाल ने

(घ) रिश्तेदारों ने (ग)

लघुत्तरात्मक प्रश्न-

1. **लेखिका के पिता ने रसोई को 'भटियारखाना' कहकर क्यों संबोधित किया है? एक कहानी यह भी पाठ के आधार पर स्पष्ट कीजिए।**

उत्तर- रसोईघर में व्यस्त रहने वाली लड़कियों की प्रतिभा व्यर्थ नष्ट हो जाती है। इसलिए लेखिका के पिता अपनी बेटियों को घर-गृहस्थी या चूल्हे - चौके तक सीमित नहीं रखना चाहते थे, बल्कि वे उन्हें जागरूक नागरिक बनाना चाहते थे। अत: उन्होंने रसोईघर की उपेक्षा करते हुए उसे 'भटियारखाना' कहकर सम्बोधित किया है।

2. **मन्नू भण्डारी के पिताजी के स्वभाव की क्या विशेषताएँ थी।**

उत्तर- मन्नू भण्डारी के पिता अत्यन्त कोमल, संवेदनशील और प्रखर समाज-सुधारक होने के साथ ही शक्की स्वभाव के व्यक्ति थे। वे अन्तर्विरोधों के बीच जीने के कारण अस्थिर चित व्यक्ति होने के साथ ही बेहद क्रोधी और अहमवादी व्यक्ति थे।

3. **''पड़ोस-संस्कृति मानव मन को प्रभावित करती है।'' एक कहानी यह भी पाठ के आधार पर स्पष्ट कीजिए।**

उत्तर- लेखिका के एक दर्जन प्रारम्भिक कहानियों के पात्र अजमेर के उसी मोहल्ले के रहे जिनके बीच उसका बचपन और किशोरावस्था बीती थी। लेखिका को उनकी जीवन-शैली, भाव-भंगिमाएँ, भाषा आदि याद रहीं। इससे स्पष्ट होता है कि पड़ोस - संस्कृति मानव-मन को प्रभावित करती है।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न:-

1. **मन्नू भंडारी ने अपनी माँ को व्यक्तित्वहीन क्यों कहा है?**

उत्तर- मन्नू की माँ अपने पति की आज्ञाओं का पालन करती हुई और अपनी संतानों की इच्छाओं को पूरा करती हुई सिर्फ पत्नी और एक माँ ही रह गई। उसकी स्वयं की पहचान पूर्णत: समाप्त ही हो गई। एक मशीन की तरह से सबके कार्य करते हुए माँ का स्वयं का व्यक्तित्व परिवार में नगण्य और महत्वहीन था। इसी कारण मन्नू ने अपनी अनपढ़ माँ को व्यक्तित्वहीन कहा। इसलिए अपनी संतानों के लिए आदर्श नहीं बन पाई।

2. **लेखिका मन्नू भंडारी के खंडित आत्मविश्वास को उनकी अध्यापिका द्वारा किस प्रकार उभारा गया? स्पष्ट कीजिए ।**

उत्तर- लेखिका मन्नू भंडारी बचपन से हीन भावनाओं से ग्रसित थी। जब वे कॉलेज के प्रथम वर्ष में आई, तब उनका हिन्दी की अध्यापिका शीला अग्रवाल से परिचय हुआ। मन्नू को शीला अग्रवाल ने प्रसिद्ध लेखकों की

शेखावाटी मिशन - 100

विचारात्मक किताबें पढ़ने की सलाह दी। वे उन्हें चुन-चुन कर किताबें पढ़ने को देती और बाद में उन पर लम्बी बहस भी करती थी। उन्होंने ही मन्नू भंडारी के भीतर छिपी असाधारण क्षमता से मन्नू का परिचय करवाया। उन्हीं के मार्गदर्शन में लेखिका ने हड़ताल, जुलूस, प्रभात फेरियाँ व भाषणबाजी की। अध्यापिका के प्रोत्साहन ने ही लेखिका के साहित्यिक संस्पर एवं कार्यक्षेत्र की नयी दिशा प्रदान की।

पठित गद्यांश पर आधारित प्रश्नोत्तर

शायद अचेतन के किसी पर्त के नीचे दबी इसी हीन भावना के चलते मैं अपनी किसी भी उपलब्धी पर भरोसा नहीं कर पाती.... सब कुछ मुझे तुक्का ही लगता है। पिताजी के जिस शक्की स्वभाव पर में कभी भन्न-भन्ना जाती थी। आज एकाएक अपने खण्डित विश्वासों की व्यथा के नीचे मुझे उनके शक्की स्वभाव की झलक ही दिखाई देती है.. बहुत अपनों के हाथों विश्वासघात की गहरी व्यथा से उपजा शक।

1. लेखिका अपनी उपलब्धि पर भी भरोसा क्यों नहीं कर पाती?

उत्तर- पर्त के नीचे दबी हीन भावना के कारण।

2. लेखिका को अपनी हर उपलब्धी क्या लगती है?

उत्तर- लेखिका को अपनी हर उपलब्धि एक तुक्का ही लगता है।

3. लेखिका पिताजी के शक्की स्वभाव पर क्या प्रतिक्रिया देती थी?

उत्तर- वह पिताजी के शक्की स्वभाव पर कभी-कभी भन्ना जाती थी।

4. लेखिका के पिताजी का स्वभाव शक्की क्यों हुआ

उत्तर- बहुत से अपनों के हाथों विश्वासघात की गहरी व्यथा से उनका स्वभाव शक्की हुआ।

शेखावाटी मिशन - 100

नौबतखाने में इबादत (यतींद्र मिश्र)

लेखक परिचय -

जन्म - 1977 अयोध्या (उत्तर प्रदेश)

- सहित- पत्रिका का संपादन।
- विमला देवी फाउंडेशन का संचालन।

काव्य संग्रह - यदा-कदा, अयोध्या तथा अन्य कविताएँ, ड्योडी पर अलाप

- शास्त्रीय गायिका गिरिजा देवी पर - गिरिजा पुस्तक लिखी।
- थाती का संपादन।
- नौबत खाने में 'इबादत' पाठ की विधा- व्यक्तिचित्र
- प्रस्तुत पाठ शहनाई वादक उस्ताद बिस्मिल्ला खाँ के जीवन पर आधारित ।
- संगीत को आराधना माना है।

वस्तुनिष्ठ प्रश्न-

1. उस्ताद बिस्मिल्ला खाँ के बचपन का क्या नाम था?

(क) नसीरुद्दीन (ख) अमीरुद्दीन

(ग) मुरुद्दीन (घ) कमरुद्दीन (ख)

2. शहनाई वादन में बिस्मिल्ला खाँ के उस्ताद कौन थे?

(क) शम्सुद्दीन (ख) रसूलन बाई

(ग) सलार हुसैन (घ) अली बख्श (घ)

3. बिस्मिल्लह खाँ को संगीत की आरम्भिक प्रेरणा किनसे मिली?

(क) रसूलन बाई और बतूलनबाई

(ख) अमजद अली खाँ

(ग) जरीन दारुवाला

(घ) हुसैन अहमद खाँ (क)

4. बिस्मिल्ला खाँ किस संस्कृति के प्रतीक थे?

(क) हिन्दू (ख) हिन्दू-मुस्लिम

(ग) मुस्लिम (घ) पारसी (ख)

लघुत्तरात्मक प्रश्न-

1. उस्ताद बिस्मिल्ला खाँ की काशी को क्या देन है?

उत्तर- उस्ताद बिस्मिल्ला खाँ ने काशी को हिन्दू-मुस्लिम एकता की मूल्यवान संस्कृति दी। उन्होंने मुसलमान होकर भी गंगा को मैया माना। बालाजी तथा बाबा विश्वनाथ के प्रति गहरी आस्था प्रकट कर काशी को जन्नत जैसा पवित्र माना। इस तरह की आस्था से उन्होंने हिन्दू-मुस्लिम एकता को बनाने में सहयोग किया।

2. मजहब के प्रति समर्पित बिस्मिल्ला खाँ काशी से बाहर होने पर बाबा विश्वनाथ के प्रति अपनी श्रध्दा किस प्रकार व्यक्त करते थे?

उत्तर- मजहब के प्रति समर्पित बिस्मिल्ला खाँ काशी से बाहर होने पर बाबा विश्वनाथ और बालाजी के मन्दिर की दिशा की ओर मुँह करके बैठते थे. और कुछ क्षण के लिए वे उसी ओर शहनाई को घुमाकर बजाते थे। इस तरह के शहनाई वादन के माध्यम से अपनी आस्था और श्रध्दा प्रकट करते थे।

3. शहनाई की दुनिया में डुमराँव को क्यों याद किया जाता है?

उत्तर- शहनाई और डुमराँव एक-दूसरे के पर्याय है। शहनाई बजाने के लिए जिस रीड का प्रयोग किया जाता है, वह डुमराँव में सोन नदी के किनारे ही पाई जाने वाली घास से बनाई जाती है। इसके साथ ही डुमराँव प्रसिद्ध शहनाईवादक बिस्मिल्ला खाँ का जन्म-स्थान भी है।

दीर्घउत्तरात्मक प्रश्न-

1. 'शहनाई और काशी से बढकर कोई जन्नत नहीं इस धरती पर हमारे लिए।' बिस्मिल्ला खाँ ऐसा क्यों कहा करते थे ?

उत्तर- बिस्मिल्ला खाँ के लिए शहनाई और काशी से बढकर इस धरती पर स्वर्गिक सुख प्रदान करने वाली और दूसरी कोई चीजें नहीं थी। इसलिए वे शहनाई और काशी को अपने लिए सबसे बड़ी जन्नत मानते थे। इसलिए वे ऐसा कहते थे। वो यह मानते थे कि इसी जमीन ने उन्हें तालीम दी। यही से अदब पाया । बाबा विश्वनाथ, 'संकटमोचन बालाजी व गंगा मैया की इस नगरी से बढ़कर जन्नत और नहीं।'

शेखावाटी मिशन - 100

2. बिस्मिल्ला खाँ को शहनाई की मंगल ध्वनि का नायक क्यों कहा गया है? समझाइये ।

उत्तर- बिस्मिल्ला खाँ को शहनाई की मंगलध्वनि का नायक इसलिए कहा जाता है, क्योंकि उनकी शहनाई से हमेशा ही मंगलध्वनि निकलती रही। वे काशी के विश्वनाथ, बालाजी मन्दिर में अनेक मांगलिक उत्सव-पर्वो पर शहनाई बजाते थे। इसके साथ ही उनसे बढकर और दूसरा सुरीला शहनाई वादक नहीं हुआ है। मंदिरों में सुबह की प्रथम पूजा आरती को मंगला कहा जाता है। बिस्मिल्ला खाँ के सुरीले शहनाई वादन से ही मंगला आरती शुरु होती थी। अतः उन्हें मंगलध्वनि का नायक कहा गया है।

पठित गद्यांश के आधार पर प्रश्नोत्तर

काशी संस्कृति की पाठशाला है। शास्त्रों में आनंदकानन के नाम से प्रतिष्ठित। काशी में कलाधर हनुमान व नृत्य- विश्वनाथ हैं। काशी में बिस्मिल्ला खाँ है। काशी में हजारों सालों का इतिहास है जिसमें पंडित कंठे महाराज है, विद्याधरी है। बड़े रामदास जी हैं, मौजुद्दीन खाँ हैं. व इन रसिकों से उपकृत होने वाला अपार जन-समूह है। यह एक अलग काशी है जिसकी अलग तहजीब है, अपनी बोली और अपने विशिष्ट लोग हैं। इनके अपने उत्सव है। अपना गम । अपना सेहरा - बन्ना और अपना नौहा। आप यहाँ संगीत को भक्ति से, भक्ति को किसी भी धर्म के कलाकार से, कजरी को चैती से, विश्वनाथ को विशालाक्षी से, बिस्मिल्ला खाँ को गंगाद्वार से अलग करके नहीं देख सकते।

1. शास्त्रों में काशी किस नाम से प्रसिद्ध है।

उत्तर- शास्त्रों में काशी आनंदकानन नाम से प्रसिद्ध है।

2. काशी में क्या-क्या विद्यमान है ?

उत्तर- काशी में कलाधर हनुमान, नृत्य विश्वनाथ व बिस्मिल्ला खाँ है।

3. काशी में किन रसिकों से उपकृत होने वाला अपार जन समूह है?

उत्तर - काशी में पंडित कंठे महाराज, विद्याधरी, बड़े रामदासजी, मौजुद्दीन आदि रसिकों से उपकृत होने वाला अपार जन समूह है।

4. काशी में किसको किससे अलग करके नहीं देख सकते हैं?

उत्तर- काशी में संगीत को भक्ति से, भक्ति को किसी भी धर्म के कलाकार से, कजरी को चेती से, विश्वनाथ को विशालाक्षी से एवं बिस्मिल्ला खाँ को गंगाद्वार से अलग करके नहीं देख सकते हैं।

पठित गद्यांश पर आधारित प्रश्नोत्तर

सचमुच हैरान करती है काशी- पक्का महाल से जैसे मलाई बरफ गया, संगीत, साहित्य. और अदब की बहुत सारी परंपराएँ लुप्त हो गई। एक सच्चे सुर साधक और सामाजिक की भाँति बिस्मिल्ला खाँ साहब को इन सबकी कमी खलती है। काशी में जिस तरह बाबा विश्वनाथ और बिस्मिल्ला खाँ एक-दूसरे के पूरक रहे हैं। उसी तरह मुहर्रम - ताजिया और होली - अबीर, गुलाल की गंगा-जमुनी संस्कृति भी एक दूसरे के पूरक रहे हैं। अभी जल्दी ही बहुत कुछ इतिहास बन चुका है। अभी आगे बहुत कुछ इतिहास बन जाएगा। फिर भी कुछ बचा है जो सिर्फ काशी में है। काशी आज भी संगीत के स्वर पर जगती और उसी की थापों पर सोती है। काशी में मरण भी मंगल माना गया है।

1. खाँ साहब की हैरानी का क्या कारण है?

उत्तर- मलाई बरफ गया, संगीत, साहित्य और अदब की बहुत सारी परम्पराएँ लुप्त हो गई। इसलिए हैरानी है।

2. काशी में एक-दूसरे के पूरक कौन हैं।

उत्तर- काशी में बाबा विश्वनाथ और बिस्मिल्ला खाँ एक - दूसरे के पूरक रहे हैं।

3. काशी में आज भी कौनसी संस्कृति जीवित है?

उत्तर- काशी आज भी संगीत के स्वर पर जगती और उसी की थापों पर सोती है।

4. काशी में मरण को भी कैसा माना गया है।

उत्तर- काशी में मरण को शुभ मंगलकारी मानां जाता है।

शेखावाटी मिशन - 100

संस्कृति - भदन्त आनंद कौसल्यायन

लेखक परिचय-

जन्म - सन् 1905 निधन - 1988

जन्म स्थान - सोहाना गाँव, जिला-अंबाला (पंजाब)

बचपन का नाम - हरनाम दास

धर्म - बौध्द

☞ गाँधीजी के साथ लंबे समय तक वर्धा में रहे।

संस्कृति पाठ की विधा - निबंध ।

पुस्तक प्रकाशन - 20 से अधिक

प्रमुख रचनाएँ - भिक्षु के पत्र, जो भूल ना सका, आह! ऐसी दरिद्रता, बहानेबाजी, यदि बाबा ना होते, रेल का टिकट, कहाँ क्या देखा ।

☞ देश-विदेश में हिंदी भाषा का प्रचार किया।

संस्कृति निबंध में - सभ्यता एवं संस्कृति पर प्रकाश डाला गया है।

वस्तुनिष्ठ प्रश्न-

1. **संस्कृत व्यक्ति के कार्यों के पीछे कौनसी भावना रहती है?**

(क) नि:स्वार्थ की भावना

(ख) उदारता की भावना

(ग) जनकल्याण की भावना

(घ) वीरता की भावना (ग)

2. **पेट की आग बुझाने के लिए मानव ने किसका आविष्कार किया था?**

(क) तलवार का (ख) वस्त्र का

(ग) आग का (घ) सुई-धागे का (ग)

3. **लेखक ने सभ्यता की जननी किसे कहा है।**

(क) संस्कृति को (ख) असंस्कृति को

(ग) असभ्यता को (घ) आग को (क)

4. **'संस्कृति' नामक पाठ में न्यूटन को कहा गया है।**

(क) एक वैज्ञानिक (ख) दिशा दिखाने वाला

(ग) संस्कृत मानव (घ) आदि मानव (ग)

5. **संस्कृति का सम्बन्ध मानव के किस जीवन से होता है?**

(क) बाहरी जीवन से

(ख) भौतिक जीवन से

(ग) आन्तरिक जीवन से

(घ) सामाजिक जीवन से (ग)

लघुत्तरात्मक प्रश्न-

1. **लेखक ने आग और सुई-धागे का उदाहरण देकर किनके अन्तर को स्पष्ट किया है?**

उत्तर - लेखक ने आग और सुई-धागे का उदाहरण देकर संस्कृति और सभ्यता के अन्तर को स्पष्ट किया है। जिस योग्यता, प्रवृति अथवा प्रेरणा के बल आग व सुई धागे का आविष्कार हुआ, वह है व्यक्ति विशेष की संस्कृति और उस संस्कृति द्वारा जो आविष्कार हुआ, जो चीज उसने अपने तथा दूसरों के लिए आविष्कृत की, उसका नाम है सभ्यता।

2. **लेखक के अनुसार संस्कृति कब असंस्कृति हो जाती है?**

उत्तर- लेखक के अनुसार संस्कृति में मानव-कल्याण की भावना निहित होती है। जब यही भावना टूट कर मानव के अकल्याण और विनाश में सहायक बन जाती है तब वह असंस्कृति हो जाती है। अर्थात् जिसका परिणाम असभ्यता कहलाता है इसलिए मानव में कल्याण की भावना ही होनी चाहिए।

3. **लेखक के अनुसार मनुष्य-संस्कृति का जनक होने के लिए क्या आवश्यक है?**

उत्तर- लेखक के अनुसार मनुष्य-संस्कृति का जनक होने के लिए यह आवश्यक है कि मनुष्य अपनी भौतिक आवश्यकताओं से ऊपर उठकर निरन्तर किसी सूक्ष्म रहस्य की खोज में लगा रहे और उससे जानने का प्रयत्न करें। मानव कल्याणकारी तत्वों की ही खोज करे जिससे हमारा विकास सम्भव हो सकें।

शेखावाटी मिशन - 100

दीर्घ उत्तरात्मक प्रश्नः-

1. **वास्तविक अर्थों में 'संस्कृत व्यक्ति' किसे कहा जा सकता है?**

उत्तर- लेखक के अनुसार वास्तविक अर्थ में 'संस्कृत व्यक्ति' उसे कहा जा सकता है, जो अपनी बुद्धि और विवेक के बल पर किसी नयी चीज की खोज कर और उसका दर्शन करे। अर्थात् किसी नयी चीज का आविष्कर्ता व्यक्ति ही वास्तविक संस्कृत व्यक्ति कहा जा सकता है। उदाहरण के लिए न्यूटन ने गुरुत्वाकर्षण का सिद्धान्त खोजा। अत: उसे 'संस्कृत व्यक्ति' कहा जा सकता है। महात्मा बुद्ध का मानव कल्याणकारी दर्शन भी उन्हें उत्कृष्ट संस्कृत व्यक्ति की श्रेणी में रखता है। यह खोज भौतिक एवं आध्यात्मिक दोनों क्षेत्रों में हो सकती है।

2. **आम की खोज एक बहुत बड़ी खोज क्यों मानी जाती है? इस खोज के पीछे रही प्रेरणा के मुख्य स्त्रोत क्या रहे होंगे1**

उत्तर- आग की खोज एक बहुत बड़ी खोज इसलिए मानी जाती है, क्योंकि यह खोज हमारे जीवन संचालन की एक बहुत बड़ी आवश्यकता भोजन पकाने के काम आती है। इसलिए इस खोज को आदिमानव ने एक बहुत बड़ी खोज माना और आज भी हमारे जीवन में इसका सर्वोपरि स्थान है। इसकी खोज के पीछे पेट की ज्वाला शान्त करने की प्रेरणा प्रमुख थी, साथ ही प्रकाश और गर्मी पाने की तथा हिंसक जंगली जानवरों से सुरक्षा की प्रेरणा भी रही होगी। शीत ऋतु से बचने के लिए आदिमानव इसका उपयोग करता होगा और इसी में माँस आदि भूनकर तथा जंगली कन्द-मूल पकाकर खाता होगा। शीत से रक्षा पाने और पेट भरने पर वह कितना आनन्दित होता होगा। इसी आनन्द की अनुभूति के कारण उसने अग्नि को देवता माना होगा और इसकी उपासना की होगी, जो आज भी प्रचलन में है।

पठित गद्यांश के आधार पर प्रश्नोतर -

और सभ्यता? सभ्यता है संस्कृति का परिणाम। हमारे खाने-पीने के तरीके, हमारे ओढ़ने-पहनने के तरीके, हमारे गमनागमन के साधन, हमारे परस्पर कट मरने के तरीके; सब हमारी सभ्यता है। मानव की जो योग्यता उससे आत्म-विनाश के साधनों का आविष्कार कराती है। हम उसे उसकी संस्कृति कहें या असंस्कृति और जिन साधनों के बल पर वह दिन-रात आत्म-विनाश में जुटा हुआ है, उन्हें हम उसकी सभ्यता समझें या असभ्यता ? संस्कृति का यदि कल्याण की भावना से नाता टूट जाएगा तो वह असंस्कृति होकर ही रहेगी और ऐसी संस्कृति का अवश्यंभावी परिणाम असभ्यता के अतिरिक्त दूसरा क्या होगा?

1. **संस्कृति का परिणाम किसे कहा गया है?**

उत्तर- संस्कृति का परिणाम सभ्यता को कहा गया है।

2. **मानव योग्यता से आत्मविनाश के साधनों का आविष्कारकर्ता है, उसे क्या कहते हैं?**

उत्तर- असंस्कृति या असभ्यतां ।

3. **मानव जिन साधनों के बल पर दिन-रात आत्मविनाश में जुटा हुआ है उसे क्या कहते हैं?**

उत्तर- उसे असभ्यता कहते हैं।

4. **असंस्कृति कब होकर ही रहेगी?**

उत्तर- संस्कृति का यदि कल्याण की भावना से नाता टूट जायेगा हो वह असंस्कृति होकर ही रहेगी।

शेखावाटी मिशन - 100

कृतिका

माता का अँचल

वस्तुनिष्ठ प्रश्न-

1. 'माता का अंचल' कृति के रचनाकार है-

(क) शिवपूजन सहाय (ख) मधु कांकरिया

(ग) कमलेश्वर (घ) शिव प्रसाद मिश्र रूद्र (क)

2. 'देहाती दुनिया' उपन्यास से लिया गया पाठ है -

(क) माता का अँचल (ख) साना साना हाथ जोड़ी

(ग) मैं क्यों लिखता हूँ (घ) इनमें से कोई नहीं (क)

3. 'माता का अँचल' पाठ में लेखक का असली नाम क्या था?

(क) भोलानाथ (ब) तारकेश्वरनाथ

(ग) कमलनाथ (घ) रामनाथ (ख)

4. भोलानाथ के पिताजी पूजा के समय उनके मस्तक पर किसका तिलक लगाते थे?

(क) चंदन (ख) भभूत

(ग) कुमकुम (घ) सिन्दूर (ख)

5. रामनामा बही में लेखक के पिताजी कितनी बार राम-नाम लिखते थे?

(क) सौ बार (ख) हजार बार

(ग) दो सौ बार (घ) दस बार (ख)

6. 'उतान' शब्द का क्या अर्थ है -

(क) पीठ के बल लेटना (ख) अवसर

(ग) सरोबार कर देना (घ) भोज (क)

7. 'माता के अंचल' पाठ के लेखक को बचपन में किससे अधिक लगाव था?

(क) माता (ख) पिता

(ग) भाई (घ) बहन (ख)

8. बचपन में लेखक अपने पिताजी के साथ कौनसा खेल खेलता था?

(क) कब्बडी (ख) रस्साकस्सी

(ग) कुश्ती (घ) फुटबाल (ग)

9. मकई के खेत में किसका झुण्ड चर रहा था ?

(क) बकरियों का (ख) भैसों का

(ग) चिड़ियों का (ग) भेड़ों का (ख)

10. चूहों के बिल में पानी डालने से बिल से क्या निकला?

(क) चूहा (ख) छुछून्दर

(ग) नेवला (घ) साँप (घ)

11. 'बुढ़वा बेईमान माँगे करेला का चोखा' कहकर बच्चों ने किसको चिड़ाया था?

(क) बैजू (ख) भोलानाथ

(ग) गणेश (घ) मूसन तिवारी (घ)

12. 'माता का अंचल' पाठ किस शैली में लिखा गया है-

(क) डायरी शैली (ख) नाट्य शैली

(ग) आत्मकथात्मक शैली

(घ) इनमें से कोई नहीं (ग)

13. अमोला किसे कहते है?

(क) आँवला

(ख) एक प्रकार की सब्जी

(ग) आम का उगता हुआ पौधा

(घ) अनान का का पेड़ (ग)

14. 'माता का अँचल' पाठ में 'महतारी' शब्द का अर्थ है-

(क) मामा (ख) मामी

(ग) माता (घ) पिता (ग)

15. 'माता का अँचल' पाठ में लेखक अपने पिताजी को क्या कहकर पुकारा करते थे-

(क) बाबू जी (ख) पिताजी

(ग) पापा जी (घ) बापू जी (क)

शेखावाटी मिशन - 100

लघुत्तरात्मक प्रश्नः-

1. ''माता का अँचल पाठ में बालक भोलानाथ व बाबूजी के मित्रवत प्रेम के साथ वात्सल्य भी उभरता है।'' सोदाहरण समझाइए।

उत्तर- भोलानाथ के पिता एक सजग व स्नेही पिता है। उनके दिन का आरम्भ ही भोलानाथ के साथ शुरू होता है। उसे नहलाकर पूजा पाठ कराना, उसका अपने साथ घुमाने ले जाना, उसके साथ खेलना व उसकी बालसुलभ क्रीड़ा से प्रसन्न होना, उनके स्नेह व प्रेम को व्यक्त करता है। उसके जरा भी पीड़ा हो जाये तो वह तुरन्त उसकी रक्षा के प्रति सजग हो जाते है। गुरूजी द्वारा सजा दिए जाने पर वह उनसे माफी माँग कर अपने साथ ही ले आते हैं।

2. 'माता का अंचल' रचना में बाल मनोभावों की अभिव्यक्ति करते करते लेखक ने तत्कालीन समाज के पारिवारिक परिवेश का चित्रण भी किया है। सोदाहरण समझाइए ।

उत्तर- लेखक का बचपन ग्रामीण परिवेश में व्यतीत हुआ। तत्कालीन सामाजिक परिवेश में जीवों के प्रति आस्था की भावना थी, जैसे :- मछलियों को आटे की गोलिया खिलाना, जो माता-पिता बालकों से अधिक लगाव रखते थे। पिता बालक के साथ कुश्ती लड़ते और खट्टा-मीठा चुम्बन माँगकर प्यार जताते थे। उसके साथ खेल-खिलते थे। माता उन्हें पशु पक्षियों की कहानियाँ सुनाकर खाना खिलाती थी। इस प्रकार आज की तुलना में माता-पिता अपने बच्चों के साथ ज्यादा समय व्यतीत करते थे।

3. ''बच्चे बचपन में निर्दोष, निर्भय और मस्त होते हैं, उन्हें परिवार की चिन्ता नहीं होती है।'' 'माता का अँचल' पाठ के आधार पर इस कथन को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर- बच्चे सचमुच निर्दोष एवं मासूम होते हैं। उनके मन में किसी भी प्रकार का डर नहीं होता है। इस कारण वे सत्य बात बोल देते हैं। उन्हें ऐसी बातों के दुष्परिणाम का ज्ञान भी नहीं होता है। इसी कारण एक बूढ़े वर ने उन बच्चों के पीछे पड़कर दूर तक खदेड़ा। मुसन तिवारी को चिड़ाने के कारण गुरुजी से मार खानी पड़ी। चूहे के बिल में पानी डालने पर साँप निकला तो उसे देखकर बेतहाशा आये और चोटे खायीं।

4. आपके विचार से भोलानाथ अपने साथियों को देखकर सिसकना क्यों भूल जाता है?

उत्तर- लेखक की इच्छा के विपरीत उसकी माँ उसे नहलाती है, बालों में तेल डालती है, बाल गूंथती है और काला टीका लगाती है, तब वह सिसकने लग जाता है और सिसकते हुए जब बाहर आता है तब बाहर खड़े अपने साथियों को देखकर उसे खेलने की याद और उसके आनन्द की अनुभूति होने लगती है। इसलिए वह सिसकना भूल जाता है।

5. इस उपन्यास अंश में तीस के दशक की ग्राम्य संस्कृति का चित्रण है। आज की ग्रामीण संस्कृति में आपको किस तरह के परिवर्तन दिखाई देते हैं?

उत्तर- इस पाठ में जिस ग्रामीण संस्कृति का चित्रण, लेखक ने किया है वह संस्कृति पूरी तरह से बदल चुकी है। क्योंकि अब वैज्ञानिक प्रगति और शहरी सभ्यता के बढ़ते प्रभाव के कारण ग्रामीण संस्कृति अछूती नहीं रही है। आजकल गांवों मे भी रहन-सहन, खानपान आदि सब शहरों की तर्ज पर होने लगा है। पहले ग्रामीण, निस्वार्थ भाव से एक-दूसरे की सहायता करते थे परन्तु अब स्वार्थ ज्यादा बढ़ रहा है। अब गाँवों में भी दूषित राजनीति के कारण लोगों के अन्दर जाति, धर्म, सम्प्रदाय और अमीर-गरीब जैसे भेद पनप गये हैं। ग्रामीण अंचल पर भी शहरी सभ्यता का प्रभाव आ चुका है अब ग्रामीण-जीवन की सरलता समाप्त सी हो गई है।

6. 'माता का अँचल' पाठ से आपको बाल - स्वभाव की कौनसी जानकारियाँ मिलती है? लिखिए।

उत्तर-'माता का अँचल' पाठ से पता चलता है कि बच्चे अपने सुख - दु:ख को मन में नहीं रखते है। यदि वे कभी दुखी होते हैं, तो उसे रो-धोकर प्रकट कर देते है। कभी वे प्रसन्न होते हैं तो हंसी-खुशी के साथ प्रकट कर देते है। इसलिए सिसकते - सिसकते एकदम हँस पड़ना और खेलने में तल्लीन रहना उनके लिए स्वाभाविक होता है। उनके सामने कोई रूचिकर प्रसंग आने पर अपने तनाव, दु:ख को भूलकर हँसते-खेलने लग जाते हैं।

7. 'महतारी के हाथ से खाने पर बच्चों का पेट भी भरता है। ऐसा क्यों कहा गया ? 'माता का अँचल' पाठ के आधार पर संक्षेप में लिखिए।

उत्तर-महतारी यानि कि माँ बच्चे को खेल-खेल में, कहानियाँ सुना कर बड़े ही प्यार से खाना खिलाती है। वे बच्चे का ध्यान खाने पर से हटाकर दूसरी तरफ कर देती है और बातों के साथ-साथ खाना खिलाती जाती है। जिससे बच्चे का पेट भर जाता है। आदमी बच्चे को जल्दी-जल्दी खाना खिलाना चाहता है इसलिए बच्चे उनके साथ ठीक से नहीं खा पाते और वे भूखे रह जाते है। इसलिए यह बात कही गई है।

साना-साना हाथ जोड़ि

1. साना-साना हाथ जोड़ि .... पाठ की लेखिका कौन है?

(क) कृष्णा सोबती (ख) महादेवी वर्मा

(ग) मधु कांकरिया (घ) मन्नू भण्डारी (ग)

2. साना-साना हाथ जोड़ि .... पाठ किस विधा में लिखा गया है?

(क) रेखाचित्र (ख) यात्रा - वृतान्त

(ग) संस्मरण (घ) कहानी (ख)

3. साना - साना हाथ जोड़ि पाठ में वर्णन है-

(क) अरावली पर्वत माला का

(ख) पश्चिमी पठार का

(ग) रेगिस्तान की मिट्टी का

(घ) हिमालय की यात्रा का (घ)

4. लेखिका ने गैंगटोंक को किसका शहर कहा है?

(क) मेहनतकश बादशाहों का

(ख) मजदूरों का

(ग) परिश्रमी लोगों का

(घ) आलसियों का (क)

5. मन वृन्दावन होने का अर्थ है .... ।

(क) वृन्दावन की सेर करना

(ख) वृन्दावन में मन रमना

(ग) दु:खी होना

(घ) अत्यधिक प्रसन्न होना (घ)

6. लेखिका के गाईड व ड्राईवर का नाम क्या था?

(क) जितेन (ख) शेखर

(ग) मणि (घ) महेश (क)

7. जितेन ने देवी-देवताओं के निवास वाली जगह का क्या नाम बताया?

(क) यूमथांग (ख) खेदुम

(ग) कटाओ (घ) मेटुला (ख)

8. गैगटोंक नहीं मैडम गंतोक कहिए। ....। गंतोक मतलब है पहाड़ ....। यह किसने कहा -

(क) लेखिका ने (ख) जितेन ने

(ग) मणि ने (घ) शेखर ने (ख)

9. भारतीय आर्मी के किस कप्तान ने यूमथांग को टूरिष्ट स्पॉट बनाने में सहयोग दिया?

(क) कप्तान शेखर दत्त (ख) कप्तान शेखर कपूर

(ग) कप्तान जोगेन्द्र (घ) कप्तान सुब्बाराव (क)

10. साना - साना हाथ जोड़ि .... पाठ मे किस शहर के सौन्दर्य का वर्णन है-

(क) अगरतला (ख) गुवाहाटी

(ग) कोलकत्ता (घ) गंगटोक(सिक्किम) (घ)

11. यूमथांग घाटी की क्या विशेषता है?

(क) यह घाटी बहुत गहरी है।

(ख) यह फूलों से भर जाती है।

(ग) यह खतरनाक है।

(घ) इसमें बड़े-बड़े मैदान है। (ख)

12. जितेन ने यूमथांग घाटी में किस फिल्म की शूटिंग होने की बात कहीं है?

(क) गाइड (ख) एक फूल दो माली

(ग) बरसात (घ) राजा हिन्दुस्तानी(क)

13. गंतोक मे श्वेत पताकाएँ किस अवसर पर फहराई जाती है?

(क) शान्ति के अवसर पर

(ख) युद्ध के अवसर पर

(ग) शोक के अवसर पर

(घ) किसी उत्सव के अवसर पर (ग)

14. लेखिका ने साना-साना हाथ जोड़ि प्रार्थना किससे सीखी थी?

(क) जितेन नार्गे से (ख) स्कूली बच्चों से

(ग) नेपाली युव ती से (घ) स्कूल की शिक्षिका से (ग)

शेखावाटी मिशन - 100

15. लायुंग की सुबह कैसी थी?

(क) बादलों से युक्त

(ख) शीतल कर देने वाली

(ग) सम्मोहन जगाने वाली

(घ) बेहद शान्त और सुरम्य (घ)

16. हिमालय की तीसरी सबसे बड़ी चोटी कौनसी है?

(क) कंचन जंघा (ख) माउण्ट एवरेस्ट

(ग) K_2 शिखर (घ) जोसिस (क)

17. गैंगटॉक से यूमथांग कितनी दूरी पर था?

(क) 150 कि.मी. (ख) 152 कि.मी.

(ग) 149 कि.मी. (घ) 140 कि.मी. (ग)

18. देखते ही देखते रास्ते किसकी तरह घुमावदार होने लगे?

(क) रस्सी की तरह (ख) साँप की तरह

(ग) नदी की तरह (घ) जलेबी की तरह (घ)

लघुत्तरात्मक प्रश्न

1. चित्रलिखित- सी मैं 'माया' और 'छाया' के इस अनूठे खेल को भर-भर आँखों देखती जा रही थी।' साना- साना हाथ जोड़ि' - पाठ के आधार पर यह कौनसा खेल था?

उत्तर- गंतोक से यूमथांग की यात्रा के दौरान उस पहाड़ी प्रदेश में पल-पल प्राकृतिक परिदृश्य बदल रहा था। जैसे-जैसे लेखिका पहाड़ की ऊंचाई पर जा रही थी तो कहीं मखमली हरियाली पर दृश्य थे तो थोड़ी देर में एकदम पथरीला। कुछ देर बाद सभी दृश्यो पर बादल की धुंध छा जाती है जिससे सभी दृश्य गायब हो जाते हैं। इन्हीं प्राकृतिक लम्हों को लेखिका ने 'माया और छाया' का अनूठा खेल कहा है।

2. 'मन काव्यमय हो उठा। सत्य और सौन्दर्य को छूने लगा।' किस दृश्य को देखकर लेखिका का मन काव्यमय हो गया?

उत्तर सिक्किम में यूमथांग की यात्रा के दौरान 'सेवन सिस्टर्स वाटर फाला के दृश्य को देखकर लेखिका की आत्मा संगीत सुनने लगी। उस झरने के पास लेखिका ने बिखरे पत्थरों पर बैठकर अपना पाँव उस शीतल नीर में डुबोया तो उस आत्मानुभूति से मन काव्यमय हो उठा।

3. जितेन नार्गे ने 'धर्मचक्र' की क्या विशेषता बताई? 'साना - साना हाथ जोड़ि अध्याय के आधार पर लिखिए।

उत्तर लेखिका सिक्किम यात्रा पर गई थी। सिक्किम की राजधानी गंगटोंक से यूमथांग जाते वक्त एक जगह पर एक कुटिया में घूमता-चक्र देखा, पूछने पर नार्गे ने बताया कि यह धर्म-चक्र है। प्रेयर व्हील। इसको घुमाने से सारे पाप धुल जाते हैं।

4. मेरे लिए यह यात्रा सचमुच ही खोज यात्रा थी। लेखिका के इस कथन को 'साना-साना हाथ जोड़ि ...... पाठ के आधार पर स्पष्ट कीजिए

उत्तर गंगटॉक से यूमथांग और आगे कटाओ तक की यात्रा लेखिका के लिए खोज यात्रा थी। लेखिका ने प्रकृति के अद्भुत सौन्दर्य, उसकी सम्मोहक शक्ति, वहाँ के संघर्ष पूर्ण जीवन का अनुभव किया था। उसने वहाँ पढ़ने वाले बच्चों की कठिनाइयों, डोको में बच्चे को पीठ में बाँधे काम करती नारियों को, भीषण सर्दी में भी सीमान्त क्षेत्र में गश्त करते फौजियों को देखा। इन सत्यों की अनुभूतियों के आधार पर लेखिका ने इस यात्रा को खोज यात्रा कहा है।

5. प्रकृति ने जल संचय की व्यवस्था किस प्रकार की है?

उत्तर-यहाँ के हिम-शिखर जल-स्तम्भ के समान हैं। सर्दियों में यहाँ प्रकृति बर्फबारी करके हिमशिखरो के रूप में, जल -संग्रह कर लेती है और गर्मियों में यही बर्फ की शिलाएँ पिघल - पिघल कर जलधारा का रूप ले लेती हैं। इस पानी से लोगों की प्यास बुझती है। यह जल संचय की एक अद्भुत व्यवस्था है।

6. गंतोक को 'मेहनतकश बादशाहों' का शहर क्यों कहा गया है?

उत्तर गंतोक को मेहनतकश बादशाहों का शहर कहा गया है, क्योंकि यहाँ के स्थानीय निवासी बहुत मेहनती है। इस

शेखावाटी मिशन - 100

दुर्गम पर्वत-स्थल पर अपनी आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए यहाँ के निवासियों को कड़ा संघर्ष करना पड़ता है। अनेक असुविधाओं के बीच भी वे अपना जीवन बादशाहों के समान मस्त अंदाज में बिताते हैं, जरा भी हीनता या दीनता की भावना नहीं रखते हैं। उन्होंने गंतोक को कड़ी मेहनत से मनोरम बनाया है।

7. लोंग स्टॉक में घूमते हुए चक्र को देखकर लेखिका को पूरे भारत की आत्मा एक-सी क्यों दिखाई दी?

उत्तर लोंग स्टॉक में घूमते हुए चक्र को देखकर लेखिका ने उसके बारे में पूछा तो पता चला कि यह धर्मचक्र है। इसे घुमाने पर सारे पाप धुल जाते हैं। इस बात को जानकर लेखिका ने महसूस किया कि धार्मिक आस्थाओं और अन्धविश्वासों के बारे में सारे भारत में एक जैसी मान्यताएँ है। लोग पाप-पुण्य की व्याख्या अपने अपने ढंग से करते हैं। इतनी वैज्ञानिक, प्रगति होने पर भी भारत के लोग पापों से छुटकारा पाने के लिए किसी न किसी अन्धविश्वास का सहारा लेते हैं। यहाँ लोगों की आस्थाएँ, विश्वास, पाप-पुण्य की अवधारणाएँ और कल्पनाएँ एक जैसी हैं। यही विश्वास पूरे भारत को एक सूत्र में बाँध देता है।

8. प्राकृतिक सौन्दर्य के अलौकिक आनन्द में डूबी लेखिका को कौन-कौनसे दृश्य झकझोर गये?

उत्तर प्राकृतिक सौन्दर्य के अलोकिक आनन्द में डूबी लेखिका को अकस्मात् वहाँ के जनजीवन ने झकझोर दिया-

(i) वहाँ सड़क बनाने के लिए पत्थरों पर बैठकर पत्थर तोड़ती औरतों का दृश्य भीतर तक झकझोर गया। उनके हाथों में कुदाल और हथौड़े थे। उनमें से कइयों की पीठ पर एक बड़ी टोकरी में बच्चे बंधे हुए थे। नदी, फूलों, वादियों और झरनों के ऐसे स्वर्गिक सौन्दर्य के बीच भूख, मौत, दीनता और जिजीविषा के बीच जंग जारी है।

(ii) सात-आठ वर्ष की उम्र के ढेर सारे बच्चे तीन सोद तीन किलोमीटर की पहाड़ी चढ़कर स्कूल जाते और वहाँ से लौटते बच्चे। ये पहाड़ी बच्चे पढ़ाई के अलावा माँ के साथ मवेशी चराते हैं, पानी भरते हैं और लकड़ियों के गट्ठर ढ़ोते हैं।

(iii) सूरज ढ़लने के समय कुछ पहाड़ी औरतें गायों को चराकर लौट रही थी। उनके सिर पर एकत्र की गई लकड़ियों के भारी-भरकम गट्ठर थे। इसके साथ ही चाय के हरे-भरे बागानों में कई युवतियाँ बोकु पहनकर चाय की पत्तियाँ तोड़ रही थीं।

9. 'कटाओ' पर किसी भी दुकान का न होना उसके लिए वरदान है। इस कथन के पक्ष में अपनी राय व्यक्त कीजिए।

उत्तर 'कटाओ' सिक्किम का एक खूबसूरत किन्तु वीरान पहाड़ी स्थान है। जहाँ प्रकृति अपने पूरे वैभव के साच दृष्टिगोचर होती है। यहाँ पर लेखिका को बर्फ का आनन्द लेने के लिए जब घुटनों तक के लम्बे बूटों की आवश्यकता महसूस हुई। तब उसने देखा कि वहाँ झाँगु की तरह किराये पर मुहैया कराने वाली एक भी दुकान नहीं है। तब लेखिका को लगा कि कटाओ में किसी दुकान का न होना भी वहाँ के लिए वरदान है क्योंकि यहां झांगु की तरह दुकानों की कतार लग गयीं तो यहाँ का भी नैसर्गिक सौन्दर्भ तो खत्म होगा ही, यहाँ आबादी भी बढ़ेगी और सैलानियों की भीड़ भी। अन्ततः यहाँ भी प्रदूषण फैलेगा और यहाँ का प्राकृतिक सौन्दर्य नष्ट हो जायेगा।

शेखावाटी मिशन - 100

मैं क्यों लिखता हूँ

वस्तुनिष्ठ प्रश्न-

1. 'मैं क्यों लिखता हूँ ?' पाठ के लेखक कौन है?

(क) शिवपूजन सहाय (ख) कमलेश्वर

(ग) अज्ञेय (घ) शिवप्रसाद मिश्र (ग)

2. अज्ञेय ने बी. एससी. कहाँ से की?

(क) लाहौर (ख) श्रीनगर

(ग) भोपाल (घ) दिल्ली (क)

3. किसे संक्षिप्त वाक्यों में बाँधना आसान नहीं है?

(क) जीवन के नैतिक सम्बन्धों को

(ख) जीवन के आन्तरिक अनुभवों को

(ग) जीवन के सांस्कृतिक अनुभव को

(घ) जीवन के सामाजिक अनुभव को (ख)

4. लेखक स्वयं किसलिए लिखता है?

(क) अपनी आन्तरिक विवशता से मुक्ति पाने के लिए

(ख) तटस्थ होकर आन्तरिक विवशता को देखने के लिए

(ग) आन्तरिक विवशता को पहचानने के लिए

(घ) उपर्युक्त सभी (घ)

5. लेखकों के सामने कौनसी विवशता होती है?

(क) सम्पादकों के आग्रह की

(ख) प्रकाशक के तकाजे की।

(ग) आर्थिक आवश्यकता

(घ) उपर्युक्त सभी (घ)

6. कृतिकार वास्तव में किसके प्रति समर्पित नहीं होता?

(क) माता-पिता (ख) बाहरी दबाव

(ग) आन्तरिक दबाव (घ) गुरु (ख)

7. लेखक किस विषय के विद्यार्थी रहे है?

(क) विज्ञान (ख) भूगोल

(ग) इतिहास (घ) गणित (क)

8. लेखक को किसका पुस्तकीय ज्ञान था?

(क) अणु का

(ख) रेडियोधर्मी तत्वों का

(ग) रेडियोधर्मिता के प्रभाव का

(घ) उपर्युक्त सभी (घ)

9. लेखक ने कहाँ पर गिरे अणु बम के बारे में समाचार पढ़े ?

(क) टोक्यो (ख) मुम्बई

(ग) हिरोशिमा (ब) मणिपुर (ग)

10. किस नदी में बम फेंककर सैनिक हजारों मछलियाँ मार देते थे?

(क) गंगा (ख) कावेरी

(ग) गोदावरी (घ) ब्रह्मपुत्र (घ)

11. लेखक ने किसके आधार पर अपना लेख लिखा?

(क) सम्पादक के आग्रह पर

(ख) आर्थिक आवश्यकता के लिए

(ग) अपनी अनुभूति के आधार पर

(घ) प्रकाशक के काजे पर (ग)

12. लेखक ने कृतिकार के लिए अनुभव से गहरी चीज क्या बताई?

(क) संवेदना (ख) अनुभूति

(ग) कल्पना (घ) सन्तुष्टि (ख)

13. लेखक ने हिरोशिमा कविता कब लिखी?

(क) जापान में

(ख) हिरोशिमा में

(ग) भारत लौटकर, रेलगाड़ी में - बैठे-बैठे

(घ) अमेरिका में (ख)

14. लेखक का अनुभव अनुभूति कब बन गया?

(क) पत्थर पर अंकित मानव की छाया देखकर

(ख) हिरोशिमा अणु-विस्फोट देखकर

(ग) अस्पताल देखकर

(घ) उपर्युक्त सभी (क)

शेखावाटी मिशन - 100

15. 'अज्ञेय' जी के अनुसार इस पाठ में मोक्ष पाने का एकमात्र साधन क्या है?

(क) लड़ाई करना (ख) पूजा पाठ करना

(ग) लिखना (घ) नाचना (ग)

16. अज्ञेय जी के अनुसार किसके स्वभाव और आत्मानुशासन का महत्व होता है?

(क) कृतिकार के (ख) शिल्पकार के

(ग) मूर्तिकार के (घ) इनमें से कोई नहीं (क)

लघुत्तरात्मक प्रश्नः-

1. हिरोशिमा पहुँच कर लेखक ने कैसा अनुभव किया? उसकी मनः स्थिति का वर्णन अपने शब्दों में कीजिए।

उत्तर हिरोशिमा में पहुँच कर वहाँ के दृश्यों को देखने पर लेखक को अणुबम के विस्फोट की भयानकता का अनुभव हुआ। वहाँ की सड़कों पर घूमते हुए जले हुए पत्थर पर लम्बी उजली छाया देखकर कवि को अनुभूति हुई कि रासायनिक हमले के शिकार व्यक्तियों की क्या दशा हुई होगी? तब उन्होंने अनुमान लगाया कि मानो वहाँ कोई व्यक्ति खड़ा रहा होगा जो रेडियोधर्मी किरणों का शिकार हुआ। जिसने पत्थर तक को झुलसा दिया और उस व्यक्ति को भाप बनाकर उड़ा दिया। इसी प्रत्यक्ष अनुभूति से उन्होंने यह कविता लिखी।

2. ''मैं क्यों लिखता हूँ ?'' प्रश्न के उत्तर में लेखक ने क्या कारण बताया?

उत्तर लेखक स्वयं जानना चाहता है कि वह क्यों लिखता है इसका उत्तर देना कठिन है लेकिन लिखकर ही कोई लेखक अपने मन की विवशता को प्रकट करता है। और आकुलता से मुक्त हो जाता है। यह अलग बात है कि कुछ प्रसिद्धि मिल जाने के बाद बाह्य विवशता के आधार पर भी लिखा जाता है। कुछ सम्पादकों के आग्रह से, प्रकाशक के तकाजे से, और कुछ आर्थिक आवश्यकता से भी लिखा जाता है। परन्तु इसका सम्बन्ध आत्मिक अनुभूति से अधिक रहस्य है और यही इसका मूल कारण है।

3. लेखक की आभ्यन्तर विवशता क्या होती है! 'मैं क्यों लिखता हूँ ?' पाठ के आलोक में उत्तर दीजिए

उत्तर लेखक की आभ्यन्तर विवशता यह है कि वह स्वयं को पहचानने के लिए लिखता हूँ। लेखक लिखकर अपने मन के अन्दर की विवशता को जानना चाहता है। जो विचार उसके अन्दर छटपटाहट पैदा कर रहे हैं। उन्हें जानने के लिए लिखता है। लेखक मानता है कि कई बार बाहरी तत्वों **जैसे**- आर्थिक विवशता, सम्पादक का आग्रह, प्रसिद्धि पाने के लिए भी किया जाता है। परन्तु लेखक तटस्थ रहकर, आन्तरिक विचारों से मुक्ति पाने के लिए अपनी अनुभूति के आधार पर लिखता है।

4. हिरोशिमा पर लिखी कविता लेखक के अंतः व बाह्य दोनों दबाव का परिणाम है। यह आप कैसे कह सकते हैं?

उत्तर लेखक जापान घूमने गया था तो हिरोशिमा में उस विस्फोट से पीड़ित लोगों को देखकर उसे थोड़ी पीड़ा हुई, परन्तु उसका मन लिखने के लिए उसे प्रेरित नहीं कर पा रहा था। हिरोशिमा के पीड़ितों को देखकर लेखक को पहले ही अनुभव हो चुका था परन्तु जले पत्थर पर किसी व्यक्ति की उजली छाया को देखकर उसको हिरोशिमा में विस्फोट से प्रभावित लोगों के दर्द की अनुभूति कराई, लेखक को लिखने के लिए प्रेरित किया। इस तरह हिरोशिमा पर लिखी कविता लेखक के अन्तः व बाह्य दोनों दबाव का परिणाम है।

5. हिरोशिमा की घटना विज्ञान का भयानकतम दुरुपयोग है। आपकी दृष्टि में विज्ञान का दुरुपयोग कहाँ-कहाँ और किस तरह से हो रहा है?

उत्तर यह पूर्णतः सत्य है कि हिरोशिमा में अणुबम का प्रयोग विज्ञान का भयंकर दुरुपयोग है। इस घटना ने विज्ञान के विनाशकारी रूप से सारे संसार को परिचित करा दिया था। आजकल विज्ञान का दुरुपयोग घातक अस्त्र-शस्त्र बनाकर और उसके द्वारा आंतकवादी हमले किए जा रहे हैं। चिकित्सकों द्वारा भ्रूण - परीक्षण किया जा रहा है और अनचाहे भ्रूणों को समाप्त किया जा रहा है। चिकित्सक विविध उपकरणों की सहायता से मानव

शेखावाटी मिशन - 100

शरीर के अंग निकाल कर तस्करों को प्रोत्साहित कर रहे है। किसान जहरीले रसायन और कीटनाशक छिड़ककर पैदावार बढ़ा रहे हैं। इन फसलों से उत्पादित अनाज से लोगों का स्वास्थ्य खराब हो रहा है। विज्ञान के द्वारा आविष्कृत उपकरणों के कारण ही ध्वनि प्रदूषण फैल रहा है; निकलने वाले धुएं से वायु प्रदूषित हो रही है।

6. एक संवेदनशील युवा नागरिक की हैसियत से विज्ञान का दुरुपयोग रोकने में आपकी क्या भूमिका है?

उत्तर एक संवेदनशील, युवा नागरिक की हैसियत से विज्ञान का दुरुपयोग रोकने में हमारी भूमिका यह है कि मैं विज्ञान के जिस यंत्र की बुराई के बारे में जानता हूं उसका उपयोग करने से या उससे दूर रहने का प्रयास करता हूँ। जैसे मैं प्लास्टिक थैलियों तथा प्लास्टिक से सम्बन्धित अन्य वस्तुओं का बिल्कुल उपयोग नहीं करता हूँ और न दूसरों को उपयोग करने की सलाह देता हूँ। फसलों में कीटनाशक तथा जहरीले रसायनों को छिड़कने की कभी भी कोशिश नहीं करता हूँ। भ्रूण हत्या जैसे बुरे कार्य कराने की कभी भी किसी को सलाह नहीं देता हूँ।

7. हिरोशिमा में विज्ञान का जिस तरह दुरुपयोग हुआ वह मानवता के लिए खतरे का संकेत था। वर्तमान में यह खतरा और भी बढ़ गया है। भविष्य में ऐसी घटना की पुनरावृति न हो इस संबंध में अपने विचार स्पष्ट कीजिए।

उत्तर हिरोशिमा में जिस तरह विज्ञान का दुरुपयोग हुआ वह मानवता के इतिहास में काला दिन होने के साथ-साथ मनुष्यता के लिए कलंक भी था। विज्ञान की उत्तरोतर प्रगति के कारण यह खतरा दिनों-दिन बढ़ता जा रहा है। यदि विज्ञान का दुरूपयोग न रोका गया तो यह मानवता के अस्तित्व के लिए खतरा बन सकता है। आज आंतकवादियों द्वारा विभिन्न हथियारों का दुरुपयोग किया जा रहा है। वे कुछ ही देर में हजारों लोगों को मौत के घाट उतार देते है। विभिन्न देशों का परमाणु शक्ति सम्पन्न होना तो ठीक है परंतु उनके दुरुपयोग का दुष्परिणाम पूरी दुनिया को भुगतना पड़ेगा।

ऐसी घटनाओं की पुनरावृति रोकने के लिए विश्व के विकसित एवं परमाणु शक्ति संपन्न देशों को आगे आना चाहिए और इसका दुरुपयोग रोने के लिए सशक्त जनमत बनाना चाहिए। इन देशों द्वारा इन देशों पर तुरंत निमंत्रण लगाया जाना चाहिए, परमाणु बम बनाने के लिए आतुर है या जो अपनी परमाणु शक्ति की धौंस अन्य छोटे देशों को दिखाते हैं। यदि ये देश इसके लिए तैयार नहीं होते हैं तो उनके साथ आर्थिक और व्यापारिक संबंध समाप्त कर देना चाहिए।

शेखावाटी मिशन – 100

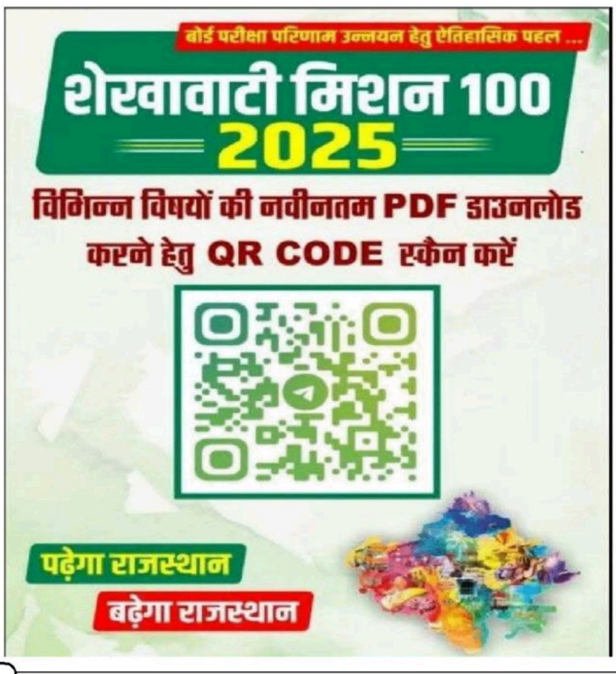

व्यावहारिक व्याकरण एवं रचना

अपठित गद्यांश एवं पद्यांश

निम्नलिखित अपठित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गये प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

प्रश्न संख्या (1 से 5 तक)।

साहस की जिन्दगी सबसे बड़ी होती है। ऐसी जिन्दगी की सबसे बड़ी पहचान यह है कि वह बिल्कुल बेखौफ होती है। साहसी मनुष्य की पहली पहचान यह है कि वह इस बात की चिन्ता नहीं करता कि तमाशा देखने वाले लोग उसके बारे में क्या सोच रहे है? जनमत की उपेक्षा करके जीने वाला आदमी दुनिया की असली ताकत होता है और मनुष्य को प्रकाश भी उसी आदमी से मिलता है। आड़ोस-पड़ोस को देखकर चलना यह साधारण जीव का काम है। क्रान्ति करने वाले लोग अपने उद्देश्य की तुलना न तो पड़ोसी के उद्देश्य से करते है और न अपनी चाल को ही पड़ोसी की चाल देखकर मद्धिम बनाते है। साहसी मनुष्य उन सपनों में भी रस लेता है जिन सपनों का कोई व्यवहारिक अर्थ नहीं है। साहसी मनुष्य सपने उधार नहीं लेता, वह अपने विचारों में रमा हुआ अपनी ही किताब पढ़ता है। झुण्ड में चलना और झुण्ड मे चरना यह भैंस और भेड़ का काम है। सिंह तो बिल्कुल अकेला होने पर भी मगन रहता है।

1. इस गद्यांश का उचित शीर्षक है-

(अ) जनमत की उपेक्षा (ब) साहसी मनुष्य

(स) मनुष्य और जिन्दगी (द) इनमें से कोई नहीं **(ब)**

2. सबसे बड़ी जिन्दगी होती है-

(अ) दरिया दिली की (ब) साहस की

(स) हास्य की (द) उधारी की **(ब)**

3. दुनिया की असली ताकत होता है-

(अ) कमजोर व्यक्ति (ब) स्वस्थ व्यक्ति

(स) साहसी व्यक्ति (द) रूग्ण व्यक्ति **(स)**

4. झुण्ड में नहीं चलता-

(अ) भेड़ (ब) भैंस

(स) सिंह (द) सियार **(स)**

5. क्रान्ति करने वाले लोग होते हैं-

(अ) वीर (ब) साहसी

(स) बलवान (द) योद्धा **(ब)**

6. अकेला होने पर भी मगन कौन रहता है-

(अ) सियार (ब) भेड़

(स) भैंस (द) सिंह **(द)**

निम्नलिखित अपठित पद्यांश को ध्यानपूर्व पढ़कर पूछे गये प्रश्नों के उत्तर लिखिए। (संख्या 1 से 5 तक)

फूलों की राह पुरानी है
शूलों की राह नयी साथी
सुमनों के पथ पर चरणों के
कितने ही चिह्न पड़े होगें
लालायित फिर भी चलने को
कितने ही चरण खड़े होगें
पर गैल अछूती शूलों की
जो चूमे वही जवानी है
जो लहू सीच कर बढ़ते हैं
उनका ही कूच रवानी है।
जीवन की चाह पुरानी है
मरने की चाह नयी साथी
फूलों की राह पुरानी है
शूलों की राह नयी साथी।

1. प्रस्तुत पद्यांश का उचित शीर्षक है-

(अ) जीवन की चाह (ब) नई राह

(स) सुमन के पथ (द) गैल अछूती शैल **(अ)**

2. 'फूल' प्रतीक है-

(अ) कोमलता का (ब) कठोरता का

(स) संकटों का

द) सुन्दर कल्पनाओं का (अ)

3. 'गैल अछूती' से तात्पर्य है-

(अ) जिस रास्ते को किसी ने छुआ नहीं

(ब) रास्ता अछूता है

(स) जो गीला, अछूत रास्ता है

(द) जिस रास्ते पर आज तक कोई गाया नहीं(**द**)

4. 'जो लहू सींच कर बढ़ते है' किसके लिए कहा गया है-

(अ) साहसी (ब) वीर

(स) पराक्रमी (द) उपर्युक्त सभी (**द**)

5. 'कूच करना' मुहावरे का अर्थ है-

(अ) भाग जाना (ब) प्रस्थान करना

(स) कुछ नया करना (द) रूके रहना (**ब**)

6. किसकी राह पुरानी बताई गई है-

(अ) शूलों की (ब) फूलों की

(स) तलवारों की (द) अंगारों की (**ब**)

विज्ञापन - लेखन

1. आपके शहर में विश्व पुस्तक मेले का आयोजन होने जा रहा है, इसके लिए एक विज्ञापन तैयार कीजिए।

उत्तर-

पुस्तक -प्रेमियों के लिए शुभ-सूचना

आपके शहर में

विश्व पुस्तक मेले का आयोजन

दिनांक **:** 1 जनवरी, 2025 से 05 जनवरी, 2025 तक

रामलीला मैदान सीकर में

मेले मे सभी भाषाओं तथा अनेक लेखकों-प्रकाशकों की पुस्तकें उचित मूल्य पर उपलबध है।

आयोजक

नेशनल बुक ट्रस्ट इण्डिया

एक बार अवश्य पधारें।

शेखावाटी मिशन - 100

2. 'नव अंकुर' विधवा महिला सहायता संस्था जयपुर द्वारा बनाई गई कारपेट की बिक्री हेतु एक विज्ञापन तैयार कीजिए।

उत्तर-

नव-अंकुर विधवा महिला सहायता संस्था, जयपुर

कॉरपेट प्रदर्शनी

दिनांक 01 अप्रैल, 2025 से 07 अप्रैल, 2025 तक

सुनहरा अवसर ! ! 30 प्रतिशत छूट ! सुनहरा अवसर !

संस्थान में हस्तकला निर्मित सुन्दर व कलात्मक कॉरपेट ब्रिकी हेतु प्रदर्शनी रखी गई है जिसमें पधारकर एक बार सेवा का मौका अवश्य दें।

स्थान

नव-अंकुर विधवा महिला सहायता संस्थाान, जयपुर

समय :- सुबह 10:00 से सांय : - 6:00 तक

3. आपके विद्यालय में S.U.P.W शिविर में अनुपयोगी सामग्री से निर्मित उपयोगी सामग्री ब्रिकी हेतु एक विज्ञान लिखिए।

उत्तर-

राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, सामी (सीकर)

सुनहारा अवसर ! **सुनहरा अवसर!**

विद्यालय में S.U.P.W शिविर में अनुपयोगी सामग्री से निर्मित उपयोगी सामग्री की बिक्री हेतु लगी प्रदर्शनी में आइए ! मनभावन सामग्री को उचित मूल्य पर खरीद कर ले जाइए !!

आपके घर की शोभा बढ़ाइए!!!

प्रदर्शनी में पधार कर छात्रों का उत्वाहवर्द्धन कीजिए!

दिनांक : 14 फरवरी, 2025

समय : प्रात: 09:00 बजे से सांय 4:00 बजे तक

स्थान : रा.उ.मा.वि. सामी

शेखावाटी मिशन - 100

4. आपके शहर जयपुर में आयोजित निदेशालय द्वारा राष्ट्रीय हैण्डलूम उत्पादों का प्रदर्शन-बिक्रय मेला आयोजित किया जा रहा है। इसका एक विज्ञापन तैयार कीजिए।

उत्तर-

जयपुर शहर में प्रतिवर्ष आयोजित होने वाला

नेशनल हैण्डलूम एक्सपो

दिनांक : 1 जनवरी, 2025 को 15 जनवरी, 2025 तक

समय : दोपहर 12 बजे से रात्रि 9 बजे तक

स्थान : स्टेच्यू सर्किल के पास

15 प्रतिशत छूट !

! हथकरधा एवं हस्तशिल्प के विविध आकर्षक उत्पाद !!

आयोजक

उद्योग दिनेशालय, जयपुर
जयपुर

विकास आयुक्त (हस्तकला)
भारत सरकार

शेखावाटी मिशन - 100

पत्र-लेखन

पत्रों के प्रकार- पत्रों को दो भागों में बांटा जा सकता है-

1. औपचारिक-पत्र **2. अनौपचारिक-पत्र**

1. औपचारिक-पत्र :- औपचारिक पत्र के अंतर्गत प्राधानाचार्य को पत्र, सरकारी कार्यालयों के अधिकारियों को पत्र, संपादक को पत्र, व्यावसायिक पत्र आदि को शामिल किया जाता है।

2. अनौपचारिक-पत्र :- व्यक्तिगत या पारिवारिक पत्रों को अनौपचारिक पत्रों में शामिल किया जाता है, पिता, माता या मित्र के पत्र, बधाई-पत्र, निमंत्रण पत्र और संवेदना पत्र इसमें शामिल किये जाते हैं।

पत्र के मुख्य अंश:-

1. प्रेषक का पता और दिनांक - व्यक्तिगत पत्रों में ऊपर दाहिनी और प्रेषक अपना पता व पत्र लेखन की तिथि लिखता है। आजकल इसे बाई ओर भी लिखा जाता है।

2. विषय संकेत : - औपचारिक पत्रों में विषय शीर्षक देकर विषय संकेत लिखा जाता है जिसे पत्र के विषय की जानकारी मिल जाती है।

3. संबोधन तथा अभिवादन :- औपचारिक पत्रों में मान्यवर, महोदय आदि आदर सूचक शब्दों से संबोधन किया जाता है। अनौपचारिक पत्रों में अपने से बड़ों के लिए आदरणीय, पूजनीय, पूजनीया, माननीय आदि का प्रयोग किया जाता है।

अपने से छोटों के लिए- प्रिय, चिरंजीवी, अनुज, सुश्री, प्यारी आदि।

हम उम्र के लिए - प्रिय मित्र, प्रिय बंधु आदि।

4. विषय वस्तु :- यह पत्र का मुख्य अंग है। इस भाग में संबंधित विषय-वस्तु का संक्षिप्त और स्पष्ट विवरण लिखना चाहिए।

5. समापन सूचक शब्द :- पत्र की समाप्ति पर प्रेषक को पत्र प्राप्तकर्ता के संबंध के अनुसार समापन सूचक शब्दों का प्रयोग करना चाहिए।

अपने से बड़ों के लिए- आपका आज्ञाकारी, आपका प्रिय आदि।

बराबर वाले के लिए - अभिन्न मित्र या सखी, तुम्हारा परम् मित्र या सखी।

अपने से छोटो के लिए - तुम्हारा शुभचिंतक या तुम्हारा अग्रज या पिता/माता आदि शब्दों का प्रयोग करना चाहिए।

औपचारिक पत्रों में - प्रार्थी, भवदीय/भवदीया, आपका आज्ञाकारी शिष्य, आपकी आज्ञाकारी शिष्या आदि।

6. पत्र प्राप्त करने वाले का पता - यह प्राय: अंत में लिखा जाता है। पत्र लिफाफे में बंद है तो उसके ऊपर लिखा जाता है।

औपचारिक पत्रों में यह सबसे पहले/प्रारम्भ में बांई ओर लिखा जाता है।

पत्र लिखते समय निमन बातों का ध्यान रखना चाहिए।

1. कागज अच्छे किस्म का हो।
2. लिखावट सुन्दर व स्पष्ट हो।
3. वर्तनी की त्रुटियाँ न हो।
4. विराम चिह्नों का उचित प्रयोग।
5. तिथि, अभिवादन, अनुच्छेद का उचित प्रयोग आदि।

शेखावाटी मिशन - 100

प्रार्थना-पत्र

1. अपने आपको राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय सुमेरपुर (पाली) का छात्र मानकर अपने विद्यालय के प्रधानाचार्य को भौतिक भ्रमण पर जाने की अनुमति के लिए एक प्रार्थना-पत्र लिखिए।

उत्तर- सेवा में,

श्रीमान प्रधानाचार्य महोदय,

राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय,

सुमेरपुर (पाली)

विषय :- शैक्षणिक भ्रमण पर जाने की अनुमति हेतु।

मान्यवर,

सादर निवेदन है कि मेरी कक्षा के सभी छात्र-छात्राएँ शैक्षिक-भ्रमण पर जाना चाहते है। इससे हमारा ज्ञानवर्द्धन तो होगा ही साथ ही अन्य जगह की ऐतिहासिक, सांस्कृतिक व प्राकृतिक सौन्दर्य की जानकारी मिल सकेगी। हम इस बार उदयपुर, चितौड़गढ व माउंट आबू का भ्रमण करना चाहते है। इसके लिए कक्षाध्यापक जी व शारीरिक शिक्षक महोदय का मार्गदर्शन प्राप्त है।

अत: हमें शैक्षिक-भ्रमण पर जाने की अनुमति प्रदान कर अनुग्रहित करें।

दिनांक : 10 नवम्बर, 2025

आपका आज्ञाकारी शिष्य

अजय कुमार

कक्षा - 10

राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय

सुमेरपुर (पाली)

शेखावाटी मिशन - 100

2. प्रधानचार्य राजकीय माध्यमिक विद्यालय मन्दसौर (पाली) की ओर से अपने जिले के मुख्य चिकित्सा अधिकारी को पत्र लिखिए। जिसमें विद्यालय के छात्रों के स्वास्थ्य परीक्षण का निवेदन हो।

उत्तर-

कार्यालय प्रधानाचार्य राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय मन्दसौर

क्रमांक : रा.उ.मा.वि./मन्दसौर/100/2024-25 **दिनांक :** 2-01-2025

प्रेषक,

प्रधानाचार्य,

रा.उ.मा.वि. मन्दसौर, पाली

सेवामें,

श्रीमान मुख्य चिकित्सा अधिकारी,

पाली

विषय : छात्रों का स्वास्थ्य परीक्षण करवाने हेतु।

महोदय,

उपर्युक्त विषयान्तर्गत लेख है कि प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष भी शिक्षा विभाग के आदेश की अनुपालना में छात्रों का स्वास्थ्य परीक्षण विद्यालय परिसर में करना अनिवार्य है।

इस संबंध में विद्यालय में अध्ययनरत 700 छात्रों के स्वास्थ्य परीक्षण के लिए चिकित्सकों की एक टीम अतिशीघ्र विद्यालय में भिजवाने की कृपा करें।

भवदीय

प्रधानाचार्य

राउमावि, मन्दसौर

शेखावाटी मिशन - 100

3. स्वयं को आलोक कुमार मानते हुए अपने मित्र को जन्म-दिवस के उपलक्ष में बधाई-पत्र लिखिए।

उत्तर-

जय भवन

आदर्श नगर, जयपुर

दिनांक : 20 जनवरी, 2025

प्रिय मित्र नवीन,

सप्रेम नमस्ते,

कल तुम्हारा पत्र मिला, तुमने अपने जन्म-दिवस के अवसर पर आयोजित पार्टी में मुझे सम्मिलित होने के लिए लिखा है। मैं इस अवसर पर अवश्य आना चाहता था परन्तु माताजी के स्वास्थ्य खराब होने के कारण आने में असमर्थ हूँ। मैं तुम्हारे जन्मदिवस के शुभ अवसर पर तुम्हे बधाई देता हूँ और ईश्वर से प्रार्थना करता हूँ। मैं तुम्हारे लिये एक भेंट भेज रहा हूँ इसे स्वीकार करना और मेरी अनुपस्थिति पर नाराज मत होना।

पुनः बधाई एवं अनेक शुभकामनायें। स्नेह-कुशलपत्र की आकांक्षा के साथ

तुम्हारा मित्र

आलोक कुमार

4. आप सीकर निवासी संजय है। कोटा में अध्ययन कर रहे अपने छोटे भाई विजय को पत्र लिखिए, जिसमें अध्ययन के साथ-साथ खेलों में भी भाग लेने की सलाह दीजिए।

सीकर

15 फरवरी, 2025

प्रिय अनुज विजय,

शुभाशीष !

तुम्हारा पत्र मिला। जानकर बहुत खुशी हुई कि तुम्हारी पढ़ाई अच्छी चल रही है। पढ़ाई के साथ-साथ खेलकूद, व्यायाम व मनोरंजन भी शारीरिक एवं बौद्धिक विकास के लिए आवश्यक हैं। यह अच्छी बात है कि तुम्हारे विद्यालय में खेलकूद अनिवार्य कर रखे हैं। तुम्हे भी अध्ययन के साथ-साथ खेलों में भी भाग लेना चाहिए। इससे हमारा सर्वांगिण विकास होता है।

अन्त में मेरा यही कहना है कि कक्षा में ध्यान लगाकर सुनना तथा पढ़ाये हुए पाठ को अच्छी तरह से पढ़कर याद करना। साथ ही खेलों में भी अवश्य भाग लेना

तुम अपने लक्ष्य को प्राप्त करो। इसी कामना के साथ।

तुम्हारा शुभेच्छु

संजय

शेखावाटी मिशन - 100

निबंध-लेखन

परीक्षापयोगी कुछ महत्त्वपूर्ण निबंध

1. बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ
2. पर्यावरण प्रदूषण
3. विद्यार्थी जीवन में सूचना प्रौद्योगिकी का महत्व
4. आतंकवाद एक वैश्विक समस्या
5. योग एवं खेलकूद का शिक्षा में महत्व
6. चुनावी परिदृश्य
7. राजस्थान के प्रमुख त्योहार व लोक संस्कृति
8. विद्यार्थी जीवन में अनुशासन
9. मेरा प्रिय साहित्यकार
10. जीवन की अविस्मरणीय घटना
11. नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति
12. भाषा का महत्व
13. महंगाई एवं बेरोजगारी एक ज्वलंत समस्या

शेखावाटी मिशन - 100

संज्ञा

संज्ञा का शाब्दिक अर्थ होता है – नाम अर्थात किसी भी वस्तु, प्राणी, स्थान तथा भाव के नाम का बोध कराने वाले शब्दों को संज्ञा कहा जाता हैं।

संज्ञा के भेद – संज्ञा के प्रमुखतः निम्नलिखित तीन भेद होते हैं ।

1. **व्यक्तिवाचक संज्ञा** – जिस संज्ञा शब्द से किसी व्यक्ति विशेष, वस्तु विशेष, स्थान विशेष के नाम का बोध होता हैं उसे व्यक्ति वाचक संज्ञा कहा जाता हैं। व्यक्तिवाचक संज्ञा विशेष का बोध कराती हैं सामान्य का नहीं।

   जैसें– राम, श्याम, सीता, गीता, भारत, हिमालय, गंगा, दीपावली, सोमवार, दैनिक भास्कर, आगरा, ताजमहल आदि।

   सामान्यत व्यक्ति वाचक संज्ञा में व्यक्तियों, देशों, पर्वतों, नदियों, त्योहारों, वारों, समाचार पत्रों, नगरों, गाँवों आदि के नामों को शामिल किया जाता हैं।

2. **जातिवाचक संज्ञा** – जिन शब्दों से किसी प्राणी, वस्तु या स्थान की सम्पूर्ण जाति के नाम का बोध होता है उसे जाति वाचक संज्ञा कहते हैं ।

   जातिवाचक संज्ञा सामान्य का बोध कराती हैं विशेष का नहीं।

   जातिवाचक संज्ञा में गाय, आदमी, पुस्तक, पेड़, पंखा, पहाड़, नदी, समुद्र नगर, गाँव, शहर, कबूतर, आदि शब्दों को शामिल किया जाता हैं।

3. **भाववाचक संज्ञा** – जिस संज्ञा शब्द से प्राणियें या वस्तुओं के गुण, दशा, कार्य, मनोभाव, आदि का बोध हो, उसे 'भाववाचक संज्ञा' कहते हैं अर्थात् मनुष्य के मन में उत्पन्न होने वाले भाव के नाम को ही भाववाचक संज्ञा कहते हैं।

   जैसें– भय, क्रोध, दया, उत्साह, चिंता, बचपन, बुढ़ापा आदि।

   विशेष– किसी जातिवाचक संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, क्रिया, अव्यय शब्द के साथ प्रत्यय जोड़कर भाववाचक संज्ञा शब्द की रचना की जा सकती हैं।

जैसें–

पशु	+ ता	– पशुता
बच्चा	+ पन	– बचपन
मम	+ ता/त्व	– ममता/ममत्व
निज	+ त्व	– निजत्व
बुरा	+ आई	– बुराई
मोटा	+ आपा	– मोटापा
थकना	+ आवट	– थकावट
दूर	+ ई	– दूरी

महत्वपूर्ण प्रश्न

01. किसी भाव, अवस्था, गुण अथवा दशा के नाम को...... .... भाववाचक संज्ञा कहते है।
(मा.शि.बोर्ड.परीक्षा–2024)

01. प्रायः गुण दोष अवस्था, व्यापार, अर्मूत भाव तथा क्रिया ....संज्ञा के अंतर्गत आते हैं। (मा.शि.बोर्ड.परीक्षा–2023)
उत्तर–भाववाचक संज्ञा

03. संज्ञा किसे कहते है इसके कितने भेद होते हैं?
उत्तर–संज्ञा का शाब्दिक अर्थ होता है – नाम अर्थात किसी भी वस्तु, प्राणी, स्थान तथा भाव के नाम का बोध कराने वाले शब्दों को संज्ञा कहा जाता हैं।
संज्ञा के भेद – संज्ञा के प्रमुखतः निम्नलिखित तीन भेद होते हैं। व्यक्तिवाचक, जातिवाचक, भाववाचक

04. व्यक्तिवाचक संज्ञा किसे कहते है? उदाहरण सहित बताए।
उत्तर–जिस संज्ञा शब्द से किसी व्यक्ति विशेष, वस्तु विशेष, स्थान विशेष के नाम का बोध होता हैं उसे व्यक्ति वाचक संज्ञा कहा जाता हैं।
व्यक्तिवाचक संज्ञा विशेष का बोध कराती हैं सामान्य का नहीं।

05. जाति वाचक संज्ञा किसे कहते हैं?
उत्तर–जिन शब्दों से किसी प्राणी, वस्तु या स्थान की सम्पूर्ण जाति के नाम का बोध होता है उसे जाति वाचक संज्ञा कहते हैं ।

06. भाववाचक संज्ञा किसे कहते हैं?
उत्तर–जिस संज्ञा शब्द से प्राणियों या वस्तुओं के गुण, दशा, कार्य, मनोभाव, आदि का बोध हो, उसे 'भाववाचक संज्ञा' कहते है।

07. भाववाचक संज्ञा शब्दों की रचना किन शब्दों से की जा सकती है?
उत्तर–किसी जातिवाचक संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, क्रिया, अव्यय शब्द के साथ प्रत्यय जोड़कर भाववाचक संज्ञा शब्द की रचना की जा सकती हैं।

08. निम्नलिखित शब्दों में से व्यक्तिवाचक, जातिवाचक व भाववाचक संज्ञा शब्दों को छाँटकर लिखिए–
उत्तर–आदमी, लड़की, राम, बच्चा, पशु, हिमालय, बचपन, हँसी, क्रोध, आगरा, गौरव।

शेखावाटी मिशन - 100

सर्वनाम

⇒ सर्वनाम शब्द सर्व+नाम दो शब्दों के योग से बना है। जिसमें सर्व का अर्थ होता है सभी तथा नाम का अर्थ होता है संज्ञा अर्थात् सभी संज्ञाओं के स्थान पर प्रयुक्त होने वाले शब्द सर्वनाम कहलाते है।

परिभाषा:– संज्ञा के स्थान पर प्रयुक्त होने वाले शब्द सर्वनाम कहलाते है। **जैसे** –मैं, तुम, हम, यह, वह, कोई, किसी, कौन, जो, आदि

सर्वनाम के भेद:– सर्वनाम के निम्नलिखित 6 भेद होते है।

1. पुरुषवाचक
2. निश्चयवाचक
3. अनिश्चयवाचक
4. प्रश्नवाचक
5. निजवाचक
6. सम्बंधवाचक

1. **पुरुषवाचक सर्वनाम**:– जिन सर्वनामों का प्रयोग वक्ता या लेखक के द्वारा अपने नाम, श्रोता के नाम तथा श्रोता के अलावा अन्य किसी के नाम के स्थान पर किया जाता है, उसे पुरुष वाचक सर्वनाम कहते है।

पुरुषवाचक सर्वनाम के निम्नलिखित **तीन भेद** होते है।

(i) उत्तम पुरुषवाचक सर्वनाम :– वक्ता या लेखक के द्वारा अपने नाम के स्थान पर जिन शब्दों का प्रयोग किया जाता है उन्हें उत्तम पुरुष वाचक सर्वनाम कहते है।

जैसे–मैं, हम, मेरा, मैनें, हमें आदि।

(ii) मध्यम पुरुष वाचक सर्वनाम:– वक्ता या लेखक के द्वारा श्रोता के नाम के स्थान पर जिन शब्दों का प्रयोग किया जाता है उन्हें मध्यम पुरुष वाचक सर्वनाम कहते है।

जैसे–तू, तुम, आप, आप सब आदि।

(iii) अन्य पुरुष वाचक सर्वनाम:– वक्ता या लेखक के द्वारा श्रोता के अलवा अन्य किसी के नाम के स्थान पर जिन शब्दों का प्रयोग किया जाता है उन्हें अन्य पुरुष वाचक सर्वनाम कहते है।

जैसे– यह, वह, ये, वे, उन्होनें, उन्हें आदि।

2. **निश्चयवाचक सर्वनाम**:–किसी व्यक्ति या वस्तु की ओर निश्चित संकेत करते हुए उनके नाम के स्थान पर जिन शब्दों का प्रयोग किया जाता है, उन्हें निश्चयवाचक सर्वनाम कहते है। जैसे– यह, वह, ये, वे।

(3) अनिश्चयवाचक सर्वनाम :–जिन सर्वनाम शब्दों से किसी व्यक्ति या वस्तु की अनिश्चतता का बोध होता है तो उसे अनिश्चयवाचक सर्वनाम कहते हैं। जैसे– कोई, किसी आदि

(4) निजवाचक सर्वनाम:– जिन सर्वनाम शब्दों का प्रयोग वक्ता अपने लिए, अपनेपन के रुप में करता है तो उसे निज वाचक सर्वनाम कहते हैं।

जैसे–स्वयं, खुद, स्वतः, आप ही, अपना, अपनी, अपने आदि।

जैसे–''मैं अपनी पुस्तक पढ़ता हूँ।'' यहाँ 'मैं' शब्द उत्तम पुरुष तथा ''अपनी'' शब्द निजवाचक सर्वनाम है।

(5) प्रश्नवाचक सर्वनाम:– जिन सर्वनाम शब्दों से किसी प्रश्न का बोध होता है। उसे प्रश्नवाचक सर्वनाम कहते है। जैसे–कौन, क्या, किसे आदि।

(6) सम्बन्धवाचक सर्वनाम:– दो उपवाक्यों में प्रयुक्त संज्ञा शब्दों के बीच सम्बंध दर्शानें वाले सर्वनाम शब्द को सम्बंध वाचक सर्वनाम कहते हैं। **जैसे**–जो, जिसे, जिसका, जिसकी, जिसके आदि

महत्त्वपूर्ण प्रश्नः–

1. सर्वनाम किसे कहते है, इसके कितने भेद होते हैं?
2. पुरुषवाचक सर्वनाम किसे कहते हैं, इसके कितने भेद होते है।
3. पुरुषवाचक सर्वनाम के भेदों को उदाहरण सहित परिभाषित कीजिए।
4. निश्चयवाचक सर्वनाम किसे कहते है, उदाहरण सहित परिभाषित कीजिए।
5. अनिश्चयवाचक सर्वनाम किसे कहते है, उदाहरण सहित परिभाषित कीजिए।
6. निजवाचक सर्वनाम किसे कहते है, उदाहरण सहित परिभाषित कीजिए।

शेखावाटी मिशन - 100

विशेषण

ऐसे शब्द जो किसी संज्ञा या सर्वनाम शब्द की विशेषता बताते हैं उन्हें विशेषण कहा जाता है। जैसे–नीला, काला, हरा, नया, मोटा, ताजा, पुराना आदि।

⇒ विशेषण शब्दों के द्वारा जिस शब्द की विशेषता प्रकट की जाती है, उसे विशेष्य कहा जाता है।

⇒ विशेषण के निम्नलिखित **चार भेद** होते है।

1. गुणवाचक विशेषण
2. संख्यावाचक विशेषण
3. परिमाणवाचक विशेषण
4. संकेत वाचकविशेषण

1. गुणवाचक विशेषण–ऐसे शब्द जो किसी संज्ञा या सर्वनाम शब्द के गुण, दोष, दशा, रंग, रूप, स्थान आदि विशेषताओं को प्रकट करते हैं, गुणवाचक विशेषण कहलाते है। जैसे–भला आदमी, बुरा आचरण, टूटी कुर्सी, काला कुत्ता, सुन्दर बालक, भारतीय नारी, मीठा आम आदि।

2. संख्यावाचक विशेषण– ऐसे शब्द जो किसी संज्ञा या सर्वनाम शब्द की संख्या को प्रकट करते है, संख्यावाचक सर्वनाम कहलाते है। इसके दो उपभेद किए जाते हैं।

(i) निश्चित संख्यावाचक विशेषण– जिन विशेषण शब्दों के द्वारा किसी निश्चित संख्या को प्रकट किया जाता है। उसे निश्चित संख्यावाचक विशेषण कहते है। जैसे–पाँच आदमी, दस लड़के, सौ रुपये, तीनों लोक आदि।

(ii) अनिश्चित संख्यावाचक विशेषण– जिन विशेषण शब्दों के द्वारा किसी अनिश्चित संख्या को प्रकट किया जाता है। उसे अनिश्चित संख्यावाचक विशेषण कहते है। जैसे–कुछ लोग, थोड़े रुपये आदि

3. परिमाण वाचक विशेषण–ऐसे शब्द जो किसी वस्तु या पदार्थ के नाप, तौल या मात्रा को प्रकट करते है, परिमाण वाचक विशेषण कहलाते है।

इसके भी दो भेद होते है।

(i) निश्चित परिमाण वाचक– जिन विशेषण शब्दों के द्वारा किसी निश्चित मात्रा को प्रकट किया जाता है। उसे निश्चित परिमाणवाचक विशेषण कहते है। जैसे –दो लीटर दूध, पाँच किलो चीनी, तीन मीटर कपड़ा आदि।

(ii) अनिश्चित परिमाणवाचक विशेषण–जन विशेषण शब्दों के द्वारा किसी अनिश्चित मात्रा को प्रकट किया जाता है। उसे अनिश्चित परिमाणवाचक विशेषण कहते है।

जैसे–थोड़ा दूध, कम चीनी, थोड़ा, कपड़ा आदि

4. संकेतवाचक या सार्वनामिक विशेषण–जब किसी सर्वनाम शब्द को किसी वस्तु या व्यक्ति की ओर संकेत करते हुए वाक्य में विशेषण के रूप में लिख दिया जाता है, तो वह संकेत वाचक या सार्वनामिक विशेषण कहते हैं।

जैसे– **इस** गेंद को मत फेंको **यह** पुस्तक मेरी है। **वह** घर रमेश का है।

प्रविशेषण

ऐसे शब्द जो विशेषण की विशेषता बताते हैं, प्रविशेषण कहलाते हैं **जैसे**– वह **बहुत** परिश्रमी है।
यह **बहुत** छोटा मैदान है।
यहाँ एक **अत्यंत** ऊँचा महल था।

विशेषण शब्द की रचना

कुछ शब्द मूल रूप से विशेषण ही होते है लेकिन किसी संज्ञा, सर्वनाम, क्रिया या अव्यय शब्द के साथ प्रत्यय जोड़कर विशेषण शब्द बनाये जा सकते हैं।

महत्त्वपूर्ण प्रश्नः–

1. वे शब्द जो संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता बताते हैं, उन्हें..................... कहते है। (मा.शि.बोर्ड.परीक्षा–2024)
2. विशेषण किसे कहते है इसके कितने भेद होते है।
3. गुणवाचक विशेषण किसे कहते है, उदाहरण सहित बताइये।
4. संख्यावाचक विशेषण किसे कहते है इसके कितने भेद होते है।
5. परिमाणवाचक विशेषण किसे कहते है इसके कितने भेद होते है।
6. संकेत वाचक विशेषण किसे कहते हैं? उदाहरण सहित बताइये।
7. निश्चय वाचक सर्वनाम व संकेत वाचक विशेषण में क्या अंतर होता है?

शेखावाटी मिशन - 100

क्रिया

जिस शब्द के द्वारा किसी कार्य के करनें या होने का बोध होता है, उसे क्रिया कहा जाता है।

⇒ क्रिया के बिना कोई वाक्य पूर्ण नहीं होता है। किसी भी वाक्य में कर्त्ता, क्रम तथा काल की जानकारी क्रिया पद के माध्यम से ही प्राप्त होती है।

क्रिया के भेद :–

कर्म के आधार पर क्रिया के निम्नलिखित दो भेद होते है।

1. **सकर्मक क्रिया** – जिस क्रिया का फल वाक्य में प्रयुक्त कर्म कारक शब्द पर पड़ता है, उसे सकर्मक क्रिया कहते हैं।

जैसे–पूनम **चित्र** बना रही है।
– राहुल **पुस्तक** पढ़ रहा है।
– विवेक **सितार** बजा रहा है।

सकर्मक क्रिया के निम्नलिखित दो भेद होते है।

(i) एकर्मक क्रिया–जब किसी वाक्य में एक ही कर्म कारक शब्द का प्रयोग किया जाता है। उसे एक कर्मक क्रिया कहा जाता है। **जैसे** –बच्चे **पुस्तक** पढ़ रहे हैं।
– पार्थ **टीवी** देख रहा है।

(ii) द्विकर्मक क्रिया–जब किसी वाक्य में क्रिया के साथ दो कर्मकारक शब्द प्रयुक्त होते है। तो उसे द्विकर्मक क्रिया कहा जाता है। **जैसे**–गुरुजी **छात्रों** को **पाठ** पढ़ा रहे है।

2. **अकर्मक क्रिया**– जब किसी वाक्य में कर्म का प्रयोग किए बिना ही क्रिया का प्रयोग किया जाता है अर्थात् क्रिया का फल वाक्य में प्रयुक्त कर्त्ता पर पड़ता है। उसे अकर्मक क्रिया कहते है। जैसे – राधा हँसती है।
– राम दौड़ रहा है।
– बच्चे सो रहे है।

रचना के आधार पर क्रिया के भेदः– इस आधार पर क्रिया के पाँच भेद माने जाते है।

1. संयुक्त क्रिया–जब किसी वाक्य में दो या दो से अधिक अलग–अलग धातुओं से बनी क्रिया का एकसाथ प्रयोग होता है उसे संयुक्त क्रिया कहा जाता है।
जैसे– बच्चा पढ़ने लग गया है।

2. नामधातु क्रिया– जिन क्रिया शब्दों की रचना संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण शब्दों से होती है। उसे नामधातु क्रिया कहा जाता है।
जैसे–संज्ञा–हाथ–हथियाना, बात–बतियाना
सर्वनाम–अपना–अपनाना
विशेषण–गर्म–गरमाना

3. प्रेरणार्थक क्रिया– जब किसी वाक्य में कर्ता स्वयं कोई कार्य न करके किसी अन्य को कार्य करने के लिए प्रेरित करता है तो उसे प्रेरणार्थक क्रिया कहा जाता है।
जैसे – माँ बेटे को दूध पिलाती है।
– मोहन राकेश से पत्र लिखवाता है।

4. पूर्वकालिक क्रिया–जब किसी वाक्य में एक क्रिया के समाप्त होनें के बाद दूसरी क्रिया सम्पन्न होती है तो वहाँ पहले समाप्त क्रिया को पूर्वकालिक क्रिया कहते है। जैसे–बच्चा दूध **पीकर** सो गया।
– मैं खाना **खा कर** आया हूँ।

5. कृदन्त क्रिया–धातु(क्रिया) के अंत में प्रत्यय जोड़नें से जिस क्रिया की रचना होती है उसे कृदन्त क्रिया कहते है। **जैसे**– चल–चलना, चलता, चलकर
– पढ़–पढ़ना, पढ़ता,पढ़कर
– लिख–लिखना, लिखता, लिखकर

महत्वपूर्ण प्रश्नः–

1. वे क्रियाएँ जिनके साथ कर्म प्रयुक्त नहीं होता, उसे... ....क्रिया कहते है।(मा.शि.बोर्ड.परीक्षा–2024)
2. क्रिया किसे कहते हैं?
3. कर्म के आधार पर क्रिया के कितने भेद होते है।
4. सकर्मक क्रिया का फल किस पर पड़ता है।
5. किस क्रिया का फल कर्ता पर पड़ता है।
6. सकर्मक क्रिया के कितने भेद होते है।
7. जिस वाक्य में क्रिया के साथ कर्म का प्रयोग नहीं होता वह............. क्रिया होती है।
8. रचना के आधार पर क्रिया के कितने भेद होते है।

शेखावाटी मिशन-100

अव्यय

अव्यय शब्द अ और व्यय के जोड़ से बना हैं। जिसमें 'अ' का अर्थ होता है – नहीं तथा व्यय को अर्थ होता है खर्च या परिवर्तन अर्थात् ऐसे शब्द जिनमें किसी भी परिस्थिति में परिवर्तन नहीं होता हैं उसे अव्यय शब्द कहा जाता हैं।

परिभाषाः– ऐसे शब्द जिनके स्वरूप में लिंग, वचन, काल आदि के प्रभाव से कोई परिवर्तन या विकार नहीं होता उसें अव्यय या अविकारी शब्द कहा जाता हैं।

अव्यय के भेदः–

1. क्रियाविशेषण
2. समुच्चयबोधक
3. सम्बन्धबोधक
4. विस्मयादि बोधक

1. **क्रियाविशेषण अव्ययः**– ऐसे अव्यय शब्द जो वाक्य में क्रिया से ठीक पहले प्रयुक्त होकर क्रिया शब्द की विशेषता को प्रकट करते हैं उन्हें क्रियाविशेषण अव्यय कहा जाता हैं।

जैसे – पूनम **कल** आयेगी।
तुम **यहाँ** बैठ सकते हो।
वह **तेज** चलता है।
रमेश **बहुत** बोलता है।

क्रियाविशेषण अव्यय के भेदः– क्रियाविशेषण अव्यय शब्दों के द्वारा क्रिया के घटित होने के समय, स्थान, रीति एवं मात्रा को प्रकट किया जाता है जिसके कारण इसके निम्न चार भेद किये जाते हैं।

1. **काल वाचक क्रियाविशेषणः**– जो क्रियाविशेषण शब्द वाक्य में क्रिया के घटिक होने के समय/काल को प्रकट करते हैं वे कालवाचक क्रिया विशेषण कहलाते हैं।

जैसेंः– **रिंकू कल** आएगी।
राहुल अब जा सकते हो।
राम तुम **बाद** में आना।
वह **दिनभर** बैठा रहा।

2. **स्थान वाचक क्रिया विशेषणः**– जो क्रिया विशेषण शब्द वाक्य में किसी स्थान को प्रकट करते है तो वे स्थान वाचक क्रिया विशेषण कहलाते है।

जैसेंः– तुम आगे चलो।
हमारे आस–पास रहना।
कोई बाहर खड़ा है।
तुम इधर आना।

3. **परिणाम वाचक क्रिया विशेषणः**– जो क्रिया विशेषण शब्द वाक्य में किसी क्रिया की मात्रा को प्रकट करते है वे परिमाण वाचक क्रिया विशेषण कहलाते है।

जैसेंः– रमेश **बहुत** बोलता है।
वह दूध बहुत पीता है।
तुम्हें चाय कम पीनी चाहिए।
नमक थोड़ा डाला गया।

4. **रीतिवाचक क्रिया विशेषण**–जिन क्रिया विशेषण शब्दों के द्वारा क्रिया की शैली/ढंग/तरीके को प्रकट किया जाता है उन्हें रीतिवाचक क्रिया विशेषण कहा जाता है।

जैसेंः– पूजा धीरे–धीरे लिखती है।
पिताजी जल्दी–जल्दी चलते है।
वह कार से आएगी।

2. **समुच्चय बोधक अव्यय शब्द**

ऐसे अव्यय शब्द जो दो शब्दों व दो वाक्यों को जोड़नें के लिए प्रयुक्त होते है वे समुच्चय बोधक अव्यय शब्द कहलाते हैं।

समुच्चय बोधक अव्यय शब्द भी दो प्रकार के होते है।

1. समानाधिकरण समुच्चय बोधक अव्यय
2. व्याधिकरण समुच्चय बोधक अव्यय

(1) **समानधिकरण समुच्चय बोधक अव्ययः**–जब कोई अव्यय शब्द दो शब्दों या वाक्यों को जोड़नें के लिए अकेला ही प्रयुक्त होता है तो वह समानाधिकरण समुच्चय बोधक अव्यय कहा जाता है। सामान्यतः साधारण वाक्य में दो शब्दों तथा संयुक्त वाक्यों में दो वाक्यों को जोड़नें में प्रयुक्त शब्द

जैसेंः– भरत आया एवं राम चला गया।
राम और श्याम घनिष्ठ मित्र है।
बैठ जाओ अथवा चले जाओ।
दो और दो चार होते है।
उसने कठिन मेहनत की परन्तु सफल नहीं हुआ।

(2) **व्याधिकरण समुच्चय बोधक अव्यय शब्दः**–

जब कोई अव्यय शब्द प्रधान उपवाक्य को आश्रित उपवाक्य से जोड़नें के लिए अपने संयोजक शब्द के

शेखावाटी मिशन - 100

साथ प्रयुक्त होता है। तो वहाँ उसे व्याधिकरण समुच्चय बोधक अव्यय शब्द कहा जाता है। सामान्यतः मिश्र वाक्य को जोड़नें वाले अव्यय शब्द व्याधिकरण अव्यय माने जाते है।

जैसे– यदि तुम मेहनत करते तो सफल हो जाते।

अगर तुम मेरे पास आते तो मैं तुम्हारी सहायता करता।

यदि तुम अपनी खैर चाहते हो तो यहाँ से भाग जाओ।

3. सम्बंध बोधक अव्ययः–जो अव्ययव शब्द किसी संज्ञा या सर्वनाम के बाद प्रयुक्त होकर उसका वाक्य के अन्य शब्दों के साथ सम्बंध स्थापित करते हैं। उन्हें सम्बंध बोधक अव्यय कहा जाता है।

जैसे– विद्यालय के समीप एक मंदिर है।

ज्ञान के बिना मुक्ति नहीं मिलती।

वह पिताजी के साथ मेला देखने गया।

चोर चौराहे तक पैदल गया।

4. विस्मयादिबोधक अव्ययः– ऐसे अव्यय शब्द जो वक्ता के हर्ष, शौक, घृणा, सम्बोधन, विस्मय, स्वीकृति, अनुमोदन आदि मनोभावों को प्रकट करते हैं, उन्हें विस्मयादि बोधक अव्यय कहते है।

जैसे– वाह! कितना सुन्दर दृश्य है।

अहा! मैं परीक्षा में सफल हो गया।

अरे! तुम यहाँ क्या कर रहे हो।

विशेष– निपात–निपात भी एक प्रकार का अव्यय शब्द होता है, यह वाक्य में किसी चरण या पद की पूर्ति हेतु प्रयुक्त किए जाते है। अर्थात् वाक्य में किसी शब्द के बाद के प्रयुक्त होकर उसके अर्थ में विशेष प्रकार का बल प्रदान करते है।

जैसे– मुझे हिन्दी भी पढ़नी है।

मुझे भी हिन्दी पढ़नी है।

प्रमुख निपात शब्दः– ही, भी, तो, तक, मात्र, भर, केवल आदि।

महत्वपूर्ण प्रश्नः–

0. वे...................... शब्द, जो दो शब्दों, वाक्यांशों या वाक्यों को जोड़ते हैं, उन्हें समुच्चयबोधक अव्यय कहते है। (मा.शि.बोर्ड.परीक्षा–2024)

संधि

दो वर्णो के परस्पर मेल से बने शब्द के लेखन और उच्चारण में कोई परिवर्तन आ जाता है उसे संधि कहा जाता है। यदि + अपि = यद्यपि

नमः + ते = नमस्ते

जगत् + ईश = जगदीश

संधि के भेद

स्वर संधि | व्यंजन संधि | विसर्ग संधि

1. स्वर संधि – स्वर + स्वर

जब स्वर के साथ स्वर का मेल होने पर स्वर वर्ण में कोई विकार उत्पन्न होता है तो उसे स्वर संधि कहा जाता है।

जैसे –

यदि + अपि = यद्यपि

विनै + अक = विनायक

रमा + ईश = रमेश

सदा + एव = सदैव

राम + अयन = रामायण

स्वर में होने वाले परिवर्तन के आधार पर इसके पाँच भेद किए जाते है।

1 **यण् स्वर संधि**

इ/ई, उ/ऊ, ऋ + असमान स्वर

↓ ↓ ↓

य् व् र्

जैसे –

स्त्री + अपि = स्त्र्यपि

गति + अनुसार = गत्यनुसार

उपरि + उक्त = उपर्युक्त

अभि + उत्थान = अभ्युत्थान

वाणी + औचित्य = वाण्यौचित्य

नदी + अर्पण = नद्यर्पण

गुरु + ऋण = गुर्वृण

अनु + अय = अन्वय

शेखावाटी मिशन - 100

मधु + आचार्य = मध्वाचार्य
गुरु + औदार्य = गुर्वौदार्य
चमू + आक्रमण = चम्वाक्रमण
मातृ + उपदेश = मात्रुपदेश
पितृ + इच्छा = पित्रिच्छा

2. **अयादि स्वर संधि**

ए ऐ ओ औ + असमान स्वर
↓ ↓ ↓ ↓
अय् आय् अव् आव्

जैसे –

चे + अन = चयन
पो + अन = पवन
गो + एषणा = गवेषणा
नै + इका = नायिका
विधै + अक = विधायक
धौ + इका = धाविका

3. **गुण स्वर संधि**

अ/आ + ई/ई → ए
अ/आ + उ/ऊ → ओ
अ/आ + ऋ → अर्

जैसे –

देव + इन्द्र = देवेन्द्र
महा + इन्द्र = महेन्द्र
रमा + ईश = रमेश
राका + ईश = राकेश
महा + उदधि = महोदधि
नव + ऊढ़ा = नवोढ़ा
महा + ऊर्मि = महोर्मि
देव + ऋषि = देवर्षि
ग्रीष्म + ऋतु = ग्रीष्मर्तु
महा + ऋण = महर्ण

4. **वृद्धि स्वर संधि**

अ/आ + ए/ऐ = ऐ
अ/आ + ओ/औ = औ

जैसे –

सदा + एव = सदैव
तथा + एव = तथैव
जल + ओक = जलौक
परम + ओज = परमौज
भाव + औचित्य = भावौचित्य

5. **दीर्घ स्वर संधि**

अ/आ + अ/आ = आ
इ/ई + इ/ई = ई
उ/ऊ + उ/ऊ = ऊ

जैसे –

मध्य + अवधि = मध्यावधि
जन + अर्दन = जनार्दन
दीप + आधार = दीपाधार
कटक + आकीर्ण = कटकाकीर्ण
कारा + आवास = कारावास
प्रति + इत = प्रतीत
रवि + इन्द्र = रवीन्द्र
कवि + इन्द्र = कवीन्द्र
अभि + ईप्सा = अभीप्सा
अधि + ईक्षक = अधीक्षक
फणी + इन्द्र = फणीन्द्र
श्री + ईश = श्रीश
मधु + उत्सव = मधूत्सव
चमू + उत्साह = चमूत्साह
सरयू + ऊर्मि = सरयूर्मि
भू + ऊर्ध्व = भूर्ध्व

व्यंजन संधि –

नियम नम्बर 1

क् / च् / ट् / त् / प् + 3, 4 वर्ण, य, र, ल, व सभी स्वर
↓ ↓ ↓ ↓ ↓
ग् ज् ड् द् ब्

जैसे –

वाक् + ईश = वागीश
अच् + अन्त = अजन्त
षट् + आनन = षडानन
सत् + उपदेश = सदुपदेश
जगत् + ईश = जगदीश

नियम नम्बर 2

क् / च् / ट् / त् / प् + पंचम वर्ण विशेषकर न/म
↓ ↓ ↓ ↓ ↓
ङ् ञ् ण् न् म्

जैसे – वाक् + मय = वाङ्मय

शेखावाटी मिशन - 100

प्राक् + मुख = प्राङ्.मुख
उत् + मूलन = उन्मूलन
उत् + नयन = उन्नयन
अप् + मय = अम्मय
षट् + मास = षण्मास
षट् + मूर्ति = षण्मूर्ति
सत् + मति = सन्मति
जगत् + माता = जगन्माता

नियम नम्बर 3

द् + क्, त्, थ्, प्, स् = त्

उद् + कोच = उत्कोच
तद् + क्षण = तत्क्षण
संसद् + सत्र = संसत्सत्र
उद् + तेजक = उत्तेजक

नियम नम्बर 4 'म' का नियम

जब कभी + से पहले 'म्' वर्ण तथा + के बाद क से लेकर म् तक कोई भी वर्ण आता हैं तो संधि कार्य करते समय + से पहले आने वाले म् वर्ण को + के बाद आने वाले वर्ण के पाँचवे वर्ण में बदल देना चाहिए।

लेखन में पंचम वर्ण के स्थान पर अनुस्वार भी मान्य है।

जैसे –
सम् + चार = सञ्चार/संचार
सम् + गति = सङ्.गति/संगति
अलम् + कार = अलङ्.कार/अलंकार
सम् + न्यासी = सन्नयासी/संन्यासी

– 'म' का नियम – 2

म् + य् र् ल् व् ह्
↓
अनुस्वार
जैसे –
सम् + शय = संशय
सम् + रक्षक = संरक्षक

– 'म' का नियम 3

सम् + कृ धातु से बनने वाला कोई शब्द
↓ ↓
अनुस्वार स्
जैसे – सम् + कृत = संस्कृत
सम् + कृति = संस्कृति

त्/द् का नियम –

त्/द् + च/छ् सत् + चरित्र = सच्चरित्र
↓ उत्/उद् + छेद = उच्छेद
च्

त्/द् + ज/झ सत् + जन = सज्जन
↓ जगत् + जननी = जगज्जननी
ज्

त्/द् + ट तत्/तद् + टीका = तट्टीका
↓
ट्

त्/द् + ड् उत्/उद् + डयन = उड्डयन
↓
ड्

त्/द् + ल उत्/उद् + लेख = उल्लेख
↓
ल्

त्/द् + श् उत्/उद् + श्वास = उच्छ्वास
↓ ↓ उत्/उद् + शृंखल = उच्छृंखल
च् छ्

चागम संधि – स्वर + 'छ'
↓
जैसे –अनु + छेद = अनुच्छेद 'च्'
तरु + छाया = तरुच्छाया
प्रति + छाया = प्रतिच्छाया

नियमः– इ/उ + स् त् थ् द् ध् न्
↓ ↓ ↓ ↓ ↓ ↓
ष् ट् ठ् ड् ढ् ण्
जैसे – प्रति + स्था = प्रतिष्ठा
अभि + सेक = अभिषेक
युधि + स्थिर = युधिष्ठिर
अनु + संगी = अनुषंगी

शेखावाटी मिशन – 100

विर्सग संधि

जब विसर्ग के साथ किसी स्वर अथवा व्यंजन वर्ण का मेल होने पर विसर्ग में कोई परिवर्तन हो जाता है तो वहाँ विसर्ग संधि मानी जाती हैं–

जैसे हैं– नमः + ते– नमस्ते

सरः + ज – सरोज

यजुः + वेद – यजुर्वेद

विर्सग संधि के भेद :– संधि कार्य करने पर विसर्ग में होने वाले परिवर्तन के आधार पर विसर्ग संधि के तीन भेद माने जाते हैं।

(1) सत्व विसर्ग संधि

(2) उत्व विसर्ग संधि

(3) रूत्व विर्सग संधि

(1) **सत्व विर्सग संधिः–** संधि कार्य करते समय जब विसर्ग श् ष् स् वर्ण में बदल जाता हैं तो वहाँ सत्व विसर्ग संधि मानी जाती हैं।

सत्व विसर्ग संधि में निम्नानुसार परिवर्तन होता हैं।

(2) विसर्ग (:) + श् च् छ्

↓

श्

हरिः + चन्द्र – हरिश्चन्द्र

मनः + चिकित्सक – मनश्चिकित्सक

निः + छल – निश्छल

विसर्ग + ट ठ्

↓ धनुः + टीका – धनुष्टीका

ष् धनु + टंकार – धनुष्टंकार

3. **विसर्ग + त् थ् स्**

↓ नमः + ते – नमस्ते

स् अन्तः + तल – अन्तस्तल

4. **इ/उ : + क ख प फ**

↓ बहिः + कार – बहिष्कार

ष् चतुः + पथ – चतुष्पथ

धनुः + पाणि – धनुष्पाणी

2. उत्व विसर्ग संधि

अः + घोष – वर्ण

↓

ओ

यशः + दा – यशोदा

यशः + धरा – यशोधरा

अधः + गति – अधोगति

तपः + भूमि – तपोभूमि

मनः + रोग – मनोरोग

मनः + हर – मनोहर

मनः + विज्ञान – मनोविज्ञान

3. यदि अ के साथ विसर्ग तथा + के बाद अ के अलावा कोई स्वर आता है तो विसर्ग का लोप कर देना चाहिए।

अतः + एव – अतएव

यशः + इच्छा – यशइच्छा

3. रूत्व विसर्ग सन्धि

इ/उ विसर्ग (:) + घोष वर्ण

↓

र्

बहिः + गमन – बहिर्गमन

आयुः + वेद – आयुर्वेद

यजुः + वेद – यजुर्वेद

धनुः + धर – धनुर्धर

ज्योतिः + मय – ज्योतिर्मय

आशीः + वाद – आशीर्वाद

अभ्यास प्रश्न

01. 'गुण स्वर सन्धि' का सही उदाहरण है–
(मा.शि.बोर्ड.परीक्षा–2024)

(1) रमेश (2) विद्यालय
(3) मतैक्य (4) नीरोग (1)

02. किस विकल्प में सही संधिकार्य नहीं हुआ है–

(1) सुख + ऋत = सुखार्त
(2) परम + ऋत = परमार्त
(3) महा + ऋण = महर्ण
(4) कुल + अटा = कुलटा (2)

शेखावाटी मिशन - 100

03 निम्न में से किस विकल्प में सही संधिकार्य हुआ है–
(1) अभि + इप्सा = अभीप्सा
(2) लघु + उर्मि = लघूर्मि
(3) परि + इक्षा = परीक्षा
(4) अधि + ईक्षक = अधीक्षक (4)

04 किस विकल्प में सही संधिकार्य हुआ है–
(1) मनः + चिकित्सक = मनोचिकित्सक
(2) मनः + कामना = मनोकामना
(3) पयः + पान = पयः पान
(4) यशः + इच्छा = याशिच्छा (3)

05 किस विकल्प में सही संधिकार्य नहीं हुआ है–
(1) मनः + चिकित्सा = मनश्चिकित्सा
(2) प्र + ऊढ़ = प्रौढ़
(3) पयः + पान = पयःपान
(4) निर् + रस = निरस (4)

06 'षट्+ऋतु' का शुद्ध संधियुक्त पद है–
(1) षडर्तु (2) षड्तु
(3) षटर्तु (4) षट्तु (2)

07 निम्न में से किस विकल्प में सही संधि विच्छेद किया गया है–
(1) कारावास –कार + आवास
(2) गुड़ाकेश –गुड़ + आकेश
(3) आत्मवलोकन –आत्मा + अवलोकन
(4) शुक्राचार्य –शुक्र + आचार्य (4)

08 किस विकल्प में संधि नहीं है–
(1) नमस्ते (2) पराजय
(3) अतएव (4) नीरोग (2)

09 किस विकल्प में सही संधि कार्य नहीं हुआ है –
(1) प्र + ऋण = प्रार्ण
(2) वसन + ऋण = वसनार्ण
(3) उत्तम + ऋण = उत्तमार्ण
(4) ऋण + ऋण = ऋणार्ण (3)

10 किस विकल्प में सही संधि कार्य हुआ है–
(1) नि+सिद्ध = निषिद्ध
(2) अधः + पतन = अधोपतन
(3) निः (निस्) + चय = निस्चय
(4) दुः (दुर्) + अवस्था = दुरावस्था (1)

11 किस विकल्प में सही संधि कार्य नहीं हुआ है–
(1) विश्व + मित्र = विश्वामित्र
(2) दीन + नाथ = दीनानाथ
(3) मूसल + आधार = मूसलाधार
(4) सत्य + नाश = सत्यानाश (3)

12 संधि की दृष्टि से अशुद्ध विकल्प है–
(1) मनः + अभिराम = मनोभिराम
(2) अंतः + स्थ = अंतःस्थ
(3) अधः + पतन = अधोपतन
(4) पयः + आदि = पयआदि (3)

13 'षण्मार्ग' का सही संधि विच्छेद का चयन कीजिए ?
(1) षट् + मार्ग (2) षड़ + मार्ग
(3) षण् + मार्ग (4) षठ् + मार्ग (1)

14 'अप् + मय' का शुद्ध सन्धियुक्त पद है–
(1) अप्मय (2) अम्मय
(3) अपमय (4) अपम्य (2)

15 'मनोरम' पद में कौन–सी सन्धि है –
(1) स्वर (2) व्यंजन
(3) विसर्ग (4) उपर्युक्त सभी (3)

16 रजः + कण = ?
(1) रजोकण (2) रजकण
(3) रजःकण (4) रजृकण (3)

17 परः + अक्षि = ?
(1) परोक्ष (2) परोक्षि
(3) पराक्ष (4) परःअक्षि (1)

18 किस क्रमांक में दीर्घ संधि का उदाहरण नहीं है?
(1) यथातथ्य (2) यथावश्यकता
(3) यथार्थ (4) तथास्तु (1)

19 किस क्रमांक में सही संधि विच्छेद नहीं हुआ है?
(1) द्वारका + अधीश = द्वारकाधीश
(2) घृणा + आस्पद = घृणास्पद
(3) सुध + अंशु = सुधांशु
(4) शत + आयु = शतायु (3)

20 किस क्रमांक में सही संधि विच्छेद नहीं हुआ है?
(1) विद्या +अर्जन = विद्यार्जन
(2) कारा +आवास = कारावास
(3) यात + आयात = यातायात
(4) मुक्त + अवली = मुक्तावली (4)

21 किस क्रमांक में सही संधि विच्छेद नहीं है?
(1) अभि+ ईष्ट = अभीष्ट
(2) प्रति+ ईक्षा= प्रतीक्षा
(3) अति+ इत = अतीत
(4) वारि + ईश = वारीश (1)

शेखावाटी मिशन - 100

उपसर्ग

वे शब्दांश जो शब्द से पहले जुड़कर मूल शब्द के अर्थ में परिवर्तन कर देते है उसे उपसर्ग कहा जाता है। जैसे–पर+देश=प्रदेश

उपसर्ग के भेदः–

हिन्दी भाषा में मुख्यतः तीन प्रकार के उपसर्ग प्रचलित है।

1. संस्कृत के उपसर्ग
2. हिन्दी के उपसर्ग
3. विदेशी भाषा के उपसर्ग

संस्कृत के उपसर्ग :– वे शब्दांश जो तत्सम शब्दों से पहले जुड़कर नये शब्द की रचना करते है उन्हें इस श्रेणी में शामिल किया जाता है। इन्हें मूल उपसर्ग भी कहा जाता है। मूल उपसर्गो की कुल संख्या 22 होती है।

मूल उपसर्ग :–

1. **प्र (आगे/अधिक)** –प्रदेश, प्रयोग, प्रकोप, प्रभाव, प्रहार
2. **परा (विपरीत/पीछे/अधिक)** –पराजय, पराकाष्ठा, पराक्रम, पराभव
3. **अप(बुरा/हीन/विपरीत)** –अपयश, अपकीर्ति, अपकर्ष अपमान, अपकार
4. **सम्(अच्छा/पूर्ण शुद्ध)** –सम्मान, संसार, संचार, संयोग, समाचार।
5. **अनु (पीछे/समान)**–अनुचर, अनुगामी, अनुसार, अनुग्रह, अनुज।
6. **अव (बुरा/हीन)** –अवगुण, अवकाश, अवशेष, अवनति, अवतार।
7. **निस् (बिना/बाहर)** –निश्चय, निशुल्क(निःशुल्क), निच्छल, निःसंतान, निष्पाप।
8. **निर् (बिना/बाहर)** निर्लज्ज, निर्विरोध, निरपराध, निर्भय, निर्धन
9. **दुस् (बुरा/विपरीत)**–दुस्साहस, दुःशासन, दुष्कर्म, दुष्कर, दुष्परिणाम।
10. **दुर् (कठिन/बुरा/विपरीत)**–दुर्दिन, दुर्दशा, दुरात्मा, दुरवस्था, दुर्बल।
11. **वि(विशेष/भिन्न)**–विदेश, विषम, विचार, विहार, विजय
12. **आ(आड.)**–आदेश, आकार, आजीवन, आमरण, आकण्ठ
13. **नि(विशेष/बड़ा)**–नियम, निगम, निदान, निधन,निकास, निवेदन
14. **अधि(प्रधान/श्रेष्ठ)**–अधिगम, अधिकार, अधीक्षक, अधिनियम, अधिवास
15. **अतिः (अधिक/परे)** –अतिशय, अतिक्रमण, अतीश, अतीत, अत्यावश्यक, अत्यन्त।
16. **अभि (पास/सामने)**–अभियुक्त, अभिमान, अभिसार, अभ्यर्थी, अभ्यास
17. **अपि (भी)** –अपिधान, अपिहित, अपितु
18. **सु(अच्छा/सरल)** –सुगम, सुराज, सुपुत्र, सुमार्ग, सुमति, सुशील
19. **उद(ऊपर/श्रेष्ठ)** –उद्‌गम, उद्धार, उत्तम, उत्कोच, उद्‌भव
20. **प्रति(हर/सामने/विपरीत)**–प्रतिशत, प्रतिदिन, प्रतिपल, प्रत्यक्ष, प्रत्याया।
21. **परि (चारो ओर)** –परिक्रमा, परीक्षा, परीक्षक, पर्यावरण, पर्यंक, पर्याप्त।
22. **उप (पास/सहायक)**–उपहार, उपकार, उपमान, उपयोजन, उपचार।

संस्कृत के अन्य उपसर्ग–

01 **अन्तर्**– अन्तर्गत, अन्तरात्मा, अन्तर्राष्ट्रीय, अन्तर्देशीय

02 **प्रादुर्**– प्रादुर्भाव, प्रादुर्भूत

03 बहिस्– बहिष्कार, बहिष्कृत।

04 इति– इतिश्री, इतिहास, इत्यादि।

05 तिरस्– तिरस्कार, तिरस्कृत

06 तद्– तल्लीन, तन्मय,तत्काल, तद्धित, तदुपरान्त।

शेखावाटी मिशन - 100

07 अधः–अधःपतन, अधोमुख, अधोगति, अधोहस्ताक्षर, अधोवस्त्र।

08 न– नास्तिक,नग, नकुल, नपुंसक।

09 कु– कुपुत्र, कुख्यात, कुसंगति, कुकर्म।

10 सह– सहपाठी, सहकर्मी, सहोदर,सहयोगी।

11. स्व–स्वतंत्र, स्वार्थ, स्वावलम्ब, स्वाध्याय, स्वाधीन, स्वाभिमान, स्वदेश

12 पर–परतन्त्र, पराश्रित, पराधीन, परदेश, परहित

13 पुरर्(पुनः) –पुनर्जन्म, पुनर्वलोकन, पुनर्गणना, पुनर्मतदान, पुनरागमन

14 सत्–सत्संग, सज्जन, सत्कार, सदाचार, सदुपदेश, सत्कार, सद्भावना, सच्चित, सच्चरित्र

15 तद्–तत्सम, तद्भव, तल्लीन, तद्वित, तत्काल, तत्क्षण, तन्यय, तत्पर, तदुपरान्त

16 अ–अज्ञान, अहित, अविवेक, असत्य, अनश्वर, अपात्र

17 अन्–अनुपयोगी, अनुपजाऊ, अनुदित, अनुत्तर, अनीश्वर, अनेक, अनादि, अनंत, अनशन(अन्+अशन) अनृत।

हिन्दी के अन्य उपसर्ग–

01 अन– अनपढ, अनजान, अनमोल, अनहोनी, अनचाही।

02 उ–उचक्का, उजड़ना, उछलना, उखाड़ना।

03 भर– भरपेट, भरपूर, भरसक,भरकम, भरपाई।

04 स– सफल, सपूत, सबल, सजीव, सपरिवार , सशर्त।

05 नाना– नानाप्रकार, नानारूप, नानाजाति, नानाभांति।

06 क–कपूत, कलंक, कठोर।

07 सम–समतल, समकोण, समकक्ष, समदर्शी, समकालीन।

08 नि– निगोड़ा, निहत्था, निठल्ला, निधड़क।

09 अ– अज्ञान, अकाज, अमर, अमूल्य, अगाध, अछूत।

10 चौ– चौराहा, चौपाया, चौमासा, चौरंगा, चौपाल, चौखट।

11. औ–औचक औतार औसर

विदेशी उपसर्ग–

01 बे–रहित– बेघर, बेवफा, बेदर्द, बेवजह, बेइज्जत।

02 ला–बिना– लापरवाह, लाइलाज, लावारिस।

03 ब–सहित– बतौर, बशर्ते, बदौलत, बखूबी।

04 नेक– भला– नेकइंसान, नकनीयत, नेकदिल।

05 एन–ठीक– एनवक्त, एनजगह, एन मौके

06 बर–ऊपर/बाद– बरबाद, बरदाश्त, बरखाश्त, बरकरार।

07 हैड –प्रमुख– हैडमास्टर, हैडऑफिस, हैडबॉय।

08 हॉफ– आधा– हॉफकमीज, हॉफ टिकट, हॉफ पेंट।

09 सब–उप–सबइंस्पेक्टर, सबकमेटी, सबडिविजन।

10 सर–मुख्य–सरताज, सरपंच, सरफरोश, सरकार।

11. बा(सहित) –बाइज्जत, बाकायदा, बाअदब, बामुलायजा

12. खुश(अच्छा) –खुशहाल, खुशकिस्मत, खुशनसीब, खुशबू, खुशनुमा, खुशखबर

13. बद(बुरा) बदकिस्मत, बदहवास, बदहाल, बदनसीब, बदहाल, बदनीयत, बदनाम, बदकार, बदमाश

14. ला(रहित) लाजवाब, लावारिस, लाइलाज, लापरवाह, लापता,

15. ना(नहीं) –नालायक, नाजायज, नापसंद, नाकाम

16. हर–हररोज, हरवक्त, हरकदम, हरदम, हरहाल

17. हम–हमराह, हमजौली, हमवतन, हमउम्र, हमराज, हमसफर।

अभ्यास प्रश्न

1. हिन्दी में उपसर्ग.................. प्रकार के होते है।

(मा.शि.बोर्ड.परीक्षा–2024)